अंक 2 | 2022

वन विभाग
हिमाचल प्रदेश

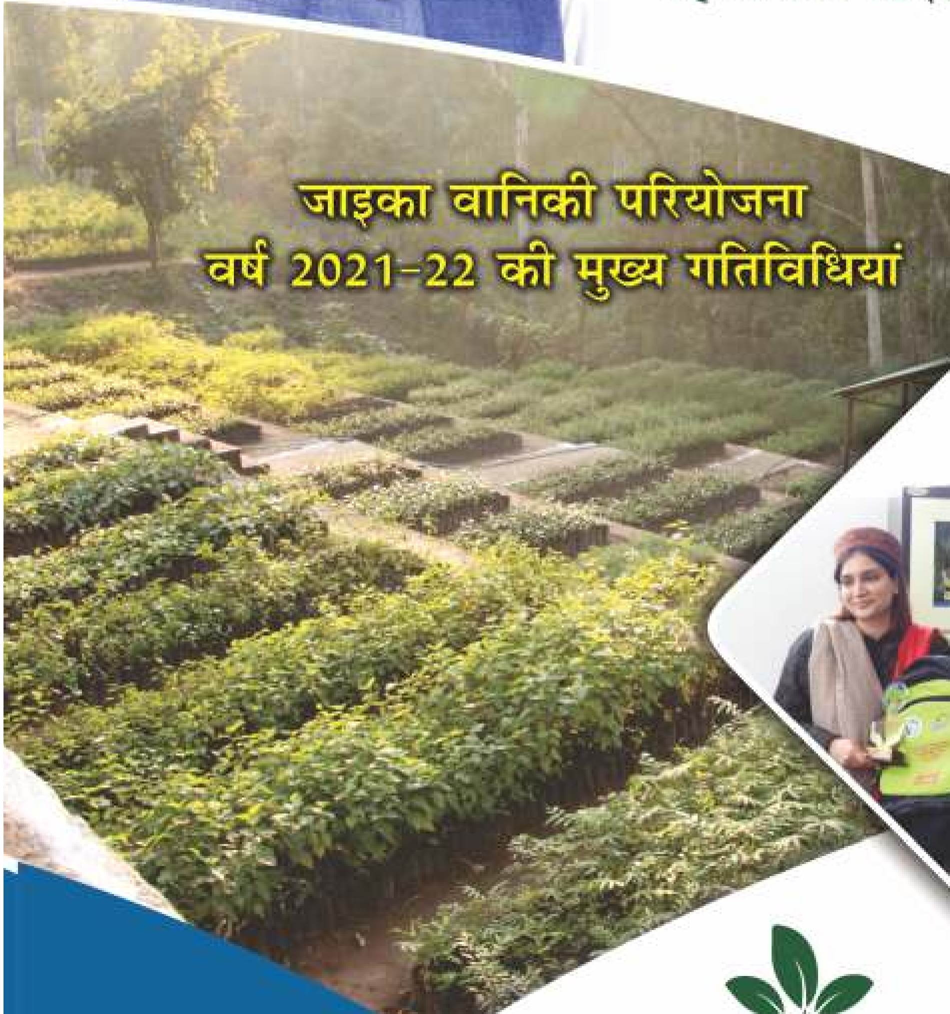

जाइका वानिकी परियोजना
वर्ष 2021-22 की मुख्य गतिविधियां

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित)

Project for Improvement of Himachal Pradesh Forest Ecosystems Management and Livelihoods

OVERALL GOAL:

Ecosystems services from forest areas are improved for sustainable socio-economic development in the state of Himachal Pradesh.

PROJECT IMPLEMENTATION AREA:

The project is being implemented in Six districts of Himachal Pradesh i.e. Kullu, Bilaspur, Mandi, Shimla, Lahaul & Spiti and Kinnaur, covering Seven Forest Circles, Eighteen Forest Divisions and 61 Forest Ranges. This Project is being implemented by an autonomous "Society" registered under HP Societies Act, 2006 named as ***"Society for Improvement of Forest Ecosystems Management & Livelihoods in Himachal Pradesh"*** through HPFD, Village Forest Development Societies (VFDSs) and Biodiversity Management Committees (BMCs) formed in project implementation area.

COST and DURATION:

The total project cost is approximately **INR. 800 Crores.** Duration is **10 Years** (2018-2019 to 2027-28).

PROJECT OBJECTIVE:

Ecosystems of forests in the project areas are sustainably managed and enhanced by the project interventions.

PROJECT COMPONENTS:

Component 1: Sustainable Forest Ecosystem Management
Component 2: Biodiversity Conservation
Component 3: Livelihoods Improvement Support
Component 4: Institutional Capacity Strengthening

PROJECT KEY ACTIVITIES AT A GLANCE:

- 379 VFDS & BMC (sub-committees) identified
- 239 Micro-Plans (for Batch-I&II) prepared
- 461 SHGs/CIGs formed, out of which 345 SHGs/CIGs are all women driven groups.
- Revolving funds provided to 120 SHGs as initial grant.
- Over 150 Business Plans for various activities prepared for the SHGs/CIGs.
- Multiple orientation Workshops/Skilled based trainings organised for SHGs/VFDSs/BMCs
- 1600 Hac area (PFM+Dept.) covered under plantation by Batch-I of VFDSs/BMCs.
- 61 Departmental Nurseries strengthened under JICA nurseries development scheme.
- Promotion of commercial cultivation of Picrorhiza kurrooa (Kutki) and Swertia cordata (Chirayita), making leaf plates, Pine needle collection, the rhizomes for propagation of Paris Polyphylla (Satua), Asparagus racemosus (Shatavari) by Jadi Buti Cell.

"Connecting with nature means to connect with ourselves.
If we do so, we nurture a better planet."
- Sh. Narendra Modi, Hon'ble Prime Minister

Sd/-
Nagesh Kumar Guleria IFS,
Addl. Pr. CCF cum Chief Project Director and CEO,
PIHPFEM&L (JICA Funded)
Potters' Hill, Summer Hill, Shimla -5

e-mail: cpdjica2018hpfd@gmail.com, pdjicakullu@gmail.com
Phones: 0177- 2832217, 2831217 Website : https://jicahpforestryproject.com

वन विभाग हिमाचल प्रदेश

जाइका वानिकी परियोजना
वर्ष 2021-22 की मुख्य गतिविधियां

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित)

परियोजना कार्यालय, पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला-171005 (हि.प्र.)

दूरभाष : 0177-2830217 ई-मेल: cpdjica2018hpfd@gmail.com

जय राम ठाकुर
मुख्य मंत्री, हिमाचल प्रदेश, शिमला-171002

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि प्रदेश में जापान सहयोग से चलाई जा रही हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एवं आजीविका सुधार परियोजना द्वारा गत एक वर्ष की विकासात्मक गतिविधियों पर वार्षिक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिमाचल प्रदेश को प्रकृति ने वन रूपी अमूल्य प्राकृतिक धरोहर का उपहार दिया है। इनके संरक्षण एवं विकास में हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एवं आजीविका सुधार परियोजना बहुमूल्य योगदान दे रही है। इस परियोजना के माध्यम से जहां एक ओर प्रदेश के वनों के घनत्व में वृद्धि पर बल दिया जा रहा है, वहीं हमारा हर सम्भव प्रयास है कि वनों पर आश्रित स्थानीय समुदायों, विशेषकर स्वयं सहायता समूहों के लिए स्थायी आजीविका की उपलब्धता को आर्थिक वृद्धि के उपयोगी साधन के रूप में सुनिश्चित बनाया जाए।

मुझे खुशी है कि इस परियोजना में सांझा वन प्रबन्धन को अपनाते हुए हमारे ग्रामीण लोगों, विशेषकर महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित हो रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस प्रकाशन के माध्यम से परियोजना के क्रिया–कलापों की नवीनतम, विस्तृत और सही जानकारी सभी को ग्रामीण क्षेत्रों तक, निरंतर पहुँचाने में मदद मिलेगी।

पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(जय राम ठाकुर)

राकेश पठानिया
वन, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171002

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि जापान सहयोग से चलाई जा रही हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एवं आजीविका सुधार परियोजना द्वारा वर्ष 2021–22 की विकासात्मक गतिविधियों पर आधारित वार्षिक पुस्तिका का सचित्र प्रकाशन किया जा रहा है।

हम सभी जानते हैं कि लगभग 800 करोड़ रू. की यह वानिकी परियोजना मुख्यतः प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में चलाई जा रही है। इस पुस्तिका के माध्यम से परियोजना के कार्यान्वयन में लगे अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ता तथा स्थानीय लोग, परियोजना द्वारा की जा रही विकासात्मक गतिविधियों की सही परिपेक्ष्य में जानकारी प्राप्त कर पाएंगे। इस प्रकार के प्रकाशन से न केवल परियोजना की गतिविधियों की जानकारी उपलब्ध होती है बल्कि यह एक प्रकार की डौक्युमैंटेशन भी है।

यह संतोष की बात है प्रदेश के वनों तथा उन पर आश्रित समुदायों की आय में वृद्धि की दिशा में चलाई जा रही जाइका वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन एवं आजीविका सुधार परियोजना में साझा वन प्रबन्धन पर बल दिया जा रहा है और इसमें अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आधुनिक तकनीकों का भरपूर उपयोग हो रहा है। इसमें ग्राम वन विकास समितियां व स्वयं सहायता समूह बढ़–चढ़ कर भाग ले रहे हैं व लाभान्वित हो रहे हैं। परियोजना के अधिकारी व कर्मचारी बधाई के पात्र हैं, जिनके अनथक प्रयासों और बेहतर तालमेल से यह सम्भव हो पा रहा है।

इस पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी ओर से अनेक शुभकामनाएं ।

(राकेश पठानिया)

निशा सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171002

संदेश

मुझे यह जानकर खुशी का अनुभव हो रहा है कि हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना द्वारा विकासात्मक गतिविधियों पर आधारित वार्षिक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं समझती हूँ कि हिमाचल प्रदेश के हरित आवरण में वृद्धि के साथ–साथ वनों पर आश्रित ग्रामीण समुदायों की आर्थिकी में सुधार पर केन्द्रित यह परियोजना अनेक मायनों में अभूतपूर्व है, क्योंकि इस परियोजना के अन्तर्गत स्थानीय लोगों के सहयोग से किए जा रहे वानिकी, भू एवं जल संरक्षण जैसे कार्यों को तकनीकी सहयोग एवं उनके दस्तावेजीकरण हेतु ड्रोन जैसी आधुनिकतम तकनीकों का प्रचलन विभाग में पहली बार आरम्भ हुआ है। इसके अतिरिक्त जैव–विविधता संरक्षण के तहत विषय विशेषज्ञों द्वारा अनेक प्रकार के शोध कार्य व जन सहयोग से प्रदेश में लुप्तप्राय होने वाली अमूल्य प्राकृतिक जड़ी–बूटियों के संरक्षण एवं संवर्द्धन का विस्तृत कार्यक्रम सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा है। ऐसा सभी के सक्रिय सहयोग से ही सम्भव हो पाया है। परियोजना की विशेषता यह है कि इसमें स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से जनसहभागिता के साथ–साथ महिला सशक्तिकरण पर बल दिया जा रहा है।

मुझे पूरा विश्वास है कि हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना द्वारा प्रकाशित की जा रही इस पुस्तिका के माध्यम से हमारे ग्रामीण तथा उनकी सेवा में लगे हमारे अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं को उनके घर–द्वार पर इन विकासत्मक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो पाएगी और जाइका वानिकी परियोजना के लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में बेहतर नतीजे प्राप्त होंगे।

पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए अनेक शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

(निशा सिंह)

अजय श्रीवास्तव

प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं वन बल प्रमुख,
हिमाचल प्रदेश शिमला-171001

संदेश

हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना द्वारा गत वर्ष की गतिविधियों पर आधारित इस पुस्तिका के प्रकाशन से मुझे हार्दिक प्रसन्न्ता हो रही है।

हिमाचल प्रदेश के वन पश्चिम हिमालय क्षेत्र के पर्यावरण को संतुलित रखने में अहम भूमिका निभाते हैं अतः वन संरक्षण एवं विकास की हमारी जिम्मेवारी और भी बढ़ जाती है। हमारे वानिकी विस्तार प्रयासों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञता व अनुभवों का लाभ भी अर्जित किया जा रहा है। भारतीय वन सर्वेक्षण संस्थान द्वारा हाल ही में जारी स्टेट आफ फॉरेस्ट रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश के वनावरण में वर्ष 2019 की तुलना में वर्ष 2021 में 915 वर्ग कि0 मी0 क्षेत्र की वृद्धि दर्ज की गई है, लेकिन वनों के घनत्व को बढ़ाने की दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना इसमें सराहनीय सहयोग दे रही है।

हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना द्वारा ड्रोन जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग कर प्रदेश के वनों के वैज्ञानिक प्रबन्धन को धार प्रदान करने में सहयोग दिया जा रहा है। यदि यह प्रयोग सफल रहे तो इसे पूरे प्रदेश के चयनित वनों में लागू किया जाएगा। इसी प्रकार परियोजना द्वारा विभागीय पौधशालाओं के आधुनिकीकरण में सहयोग कर नर्सरियों की उत्पादन क्षमता 65 लाख पौधे प्रतिवर्ष तैयार करने में अहम भूमिका निभाई जा रही है। हमारे वनों से एकत्र की जाने वाली अनेक जड़ी बूटियों को लुप्त होने से बचाने के लिए इनकी खेती पर अनुसंधान व स्थानीय समुदायों को इनकी खेती से आय अर्जित करने के विकल्प के रूप में चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। वनों पर आश्रित समुदायों को आजीविका के अनेक अवसर प्रदान कर उनकी आजीविका में सुधार लाने व वनों पर उनकी निर्भरता सीमित करने जैसे परियोजना के कार्य वास्तव में सराहनीय हैं। इसके लिए मैं, परियोजना के अधिकारियों और कर्मचारियों को बहुत बधाई देता हूं।

मेरी ओर से इस पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए अनेक शुभकामनाएं ।

(अजय श्रीवास्तव)

नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से.

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं
मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका)

संदेश

संचार क्रांति के इस युग में सोशल नेटवर्किंग का बहुत महत्व है। हमारा हर संभव प्रयास है कि सोशल नेटवर्किंग का भरपूर लाभ उठाते हुए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित जाइका वानिकी परियोजना गतिविधियों संबंधी सूचनाओं का त्वरित आदान–प्रदान हो ताकि बेहतर तालमेल द्वारा अच्छी सेवाएं प्रदान करने में सहायता मिल सके। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि गत नवम्बर माह में जाइका इंडिया के सुपरविजन दल के सीनियर रिप्रेजेन्टेटिव तथा मुख्य विकास विशेषज्ञ ने अपने हिमाचल दौरे के उपरांत प्रदेश की जाइका परियोजना की कार्य कुशलता को पूरे भारतवर्ष में चलाई जा रही परियोजनाओं में प्रथम तीन स्थानों में स्थान प्राप्त किया है। इसके लिए प्रदेश के परियोजना अधिकारी व कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना ने अपने कार्यक्रम में ड्रोन का उपयोग कर प्रदेश के वैज्ञानिक वन प्रबंधन की दिशा में नया आयाम स्थापित किया है।

मुझे आपसे यह बात सांझा करते हुए हर्ष हो रहा है कि जाइका वानिकी परियोजना द्वारा जन सहयोग से वन औषधी प्रजातियों की खेती आरंभ की गई है। इससे स्थानीय समुदायों को अतिरिक्त आय का एक साधन उपलब्ध हुआ है साथ ही इन प्रजातियों के अत्यधिक दोहन से होने वाले पर्यावरण के नुकसान को सीमित करने में भी सहायता मिली है। इस परियोजना द्वारा अनेक लुप्त प्राय होने वाली तथा आर्थिक रूप से उपयोगी टैक्सस बकाटा तथा पामारोजा जैसी प्रजातियों पर शोध व विस्तार कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिससे भविष्य में इनकी उपलब्धता सुनिश्चित हो पाएगी। हिमाचल प्रदेश के वनों को हरा–भरा करने के प्रयासों को गति प्रदान करने के लिए जाइका परियोजना द्वारा वन पौधशालाओं की आधुनिकीकरण प्रक्रिया आरंभ हो गई है जिसके सार्थक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। आज हमारी पौधशालाओं में लगभग 65 लाख पौधे तैयार करने की क्षमता विकसित हो चुकी है। परियोजना के तहत वनों पर आश्रित समुदायों की आजीविका में सुधार लाने के लिए प्रदेश में 484 स्वयं सहायता समूह का गठन किया जा चुका है। इनके द्वारा 167 व्यावसायिक योजनाएं तैयार की गई हैं और इन्हें खड्डी, मशरूम उत्पादन, पत्तल निर्माण, बड़ी–सीरा बनाने, सिलाई–बुनाई जैसी 16 से अधिक आय सृजन गतिविधियों बारे प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। अब तक 55 स्वयं सहायता समूह को उनके द्वारा तैयार की गई व्यवसायिक योजनाओं के अनुरूप कार्य आरंभ करने हेतु मशीन आदि की खरीद के लिए 28,03,783 रुपए की राशि कैपिटल कॉस्ट के रूप में आवंटित की जा चुकी है। इसके अतिरिक्त 120 स्वयं सहायता समूह को एक–एक लाख रुपए की राशि रिवाल्विंग फंड के रूप में प्रदान की गई है। इस परियोजना द्वारा किए जा रहे इन सभी कार्यों से वनों पर आश्रित गरीब लोगों की आर्थिकी में सुधार लाने की दिशा में मील का पत्थर साबित होंगे।

यह हमारे लिए गौरव की बात है कि जाइका वानिकी परियोजना की प्रगति से प्रभावित होकर प्रदेश की अन्य पंचायतों से भी उनके क्षेत्रों में परियोजना आरंभ करने के आवेदन प्राप्त हो रहे हैं यह परियोजना की सफलता का द्योतक है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूरा विश्वास है कि माननीय मुख्यमंत्री जी के गतिशील नेतृत्व तथा माननीय वन मंत्री जी के कुशल मार्गदर्शन में यह परियोजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रहेगी।

मैं, सभी क्षेत्रीय कर्मचारियों का इस प्रकाशन के लिए हार्दिक धन्यवाद करता हूं और भविष्य में भी उनके सहयोग की अपेक्षा करता हूं।

धन्यवाद।

(नागेश कुमार गुलेरिया)

विषय सूची

- सिल्वेनिया की राजदूत कनिका चौधरी ने किया जाइका मुख्यालय का दौरा 01
- प्रधान मुख्य अरण्यपाल श्री अजय श्रीवास्तव ने की बैठक की अध्यक्षता 02
- परियोजना के अधीन आने वाले जिलों, वन मण्डलों तथा वन परिक्षेत्रों की सूची 03
- हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना के लक्ष्य, ध्येय एवं घटक 04
- मुख्य विशेषताएं 05
- मुख्य गतिविधियां 06
- सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन 07
- पौधशालाओं का सुधार व पौध उत्पादन 35
- सामुदायिक विकास कार्य 41
- जैव विविधता संरक्षण 43
- सतोयामा 48
- परियोजना में GIS का प्रयोग 51
- जड़ी-बूटी प्रकोष्ठ 53
- आजीविका सुधार घटक 59
- संस्थागत क्षमता सुदृढ़ीकरण 66
- परियोजना की प्रमुख गतिविधियां 71
- मीडिया में परियोजना गतिविधियां 84

सिल्वेनिया की राजदूत कनिका चौधरी ने किया जाइका मुख्यालय का दौरा

दिनांक 09.09.2021 को भारत और संयुक्त अरब अमीरात में **पेंसिल्वेनिया की विशेष राजदूत सुश्री कनिका चौधरी** ने गुरुवार को पॉटर्स हिल में स्थित जाइका मुख्यालय का दौरा किया। अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया भा.व.से. के साथ आयोजित बैठक में उन्होंने कहा कि वह पेंसिल्वेनिया के राष्ट्रमंडल का प्रतिनिधित्व कर रहीं है। इसका उद्देश्य पेंसिल्वेनिया और भारत के राष्ट्रमंडल के बीच आपसी और रणनीतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देना है। इस बैठक के दौरान श्री नागेश गुलेरिया ने राज्य में जाइका वानिकी परियोजना की विस्तृत गतिविधियों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जाइका परियोजना बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू, शिमला, किन्नौर और लाहुल–स्पीति जिलों में 7 वन वृतों, 18 वन मण्डलों और 61 वन परिक्षेत्रों में चलाई जा रही है। उन्होंने बताया कि वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन योजना/सामुदायिक जैव विविधता प्रबंधन योजना सभी हितधारकों को लोकतांत्रिक तरीके से विधिवत रूप से शामिल करके तैयार की जा रही है। श्री नागेश गुलेरिया ने बताया कि आजीविका घटक के तहत 484 स्वयं सहायता समूहों/साँझा रूचि

समूहों का गठन किया गया है। इनमें से 419 सभी महिला संचालित ग्रुप हैं। इसमें खास बात यह है कि 22 आय सृजन मॉडलों की 167 व्यावसायिक योजनाओं पर काम कर रहे हैं। मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने राज्य के लाहुल–स्पीति और किन्नौर जिलों में प्राकृतिक रूप से उगने वाले सीबकथॉर्न (छर्मा) के प्रसार और विभिन्न पर्यावरणीय, सामाजिक–आर्थिक और औषधीय उपयोगों के बारे में राजदूत को जानकारी दी। इसके अलावा यह भी बताया कि सीमांत भूमि पर खेती की जाती है। जैव–प्रौद्योगिकी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री अरविंद कुमार भट्ट, डॉ. रमेश चंद कंग निदेशक जड़ी बूटी प्रकोष्ठ, जाइका परियोजना निदेशक श्री राजेश शर्मा और परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। सुश्री कनिका चौधरी द्वारा समृति के तौर पर परियोजना मुख्यालय परिसर में एक चिनार का पौधा रोपित किया गया।

प्रधान मुख्य अरणयपाल
श्री अजय श्रीवास्तव ने की बैठक की अध्यक्षता

दिनांक 30.10.2021 अपराह्न प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं हॉफ हिमाचल प्रदेश ने पॉटर्स हिल स्थित जाइका मुख्यालय में आयोजित बैठक की अध्यक्षता की। उन्होंने परियोजना द्वारा प्रदेश के वनों के विस्तार हेतु उपयोग की जा रही Satellite तथा Drone जैसी सुविधाओं की तकनीकी जानकारी प्राप्त की। अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से. ने दृश्य एवं श्रवण के माध्यम से परियोजना के अंतर्गत किये जा रहे कार्यों सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी साँझा की। प्रधान मुख्य अरण्यपाल ने जाइका परियोजना के अनुभवों से प्राप्त तकनीकी जानकारी को वन विभाग में व्यापक रूप में उपयोग करने की संभावनाओं पर विस्तृत विचार विमर्श किया। इस अवसर पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल (CAMPA) श्री आर. के. गुप्ता, अतिरिक्त सचिव (वन) श्री एस. पी. धीमान, मुख्य अरण्यपाल (IT) डॉ. पुष्पेंदर राणा, निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ) डॉ. रमेश चंद कंग तथा जाइका परियोजना निदेशक श्री राजेश शर्मा और परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

परियोजना के अधीन आने वाले जिलों, वन मण्डलों तथा वन परिक्षेत्रों की सूची

जिला	वन मण्डल	वनपरिक्षेत्र		वन्य जीव मण्डल	वन्य जीव परिक्षेत्र
बिलासपुर	बिलासपुर	सदर	घुमारवीं		
		स्वारघाट	झंडुता		
मण्डी	मण्डी	द्रंग	कोटली		सुन्दरनगर वन्य जीव परिक्षेत्र (बंदली वन्य प्राणी शरण्य)
		कटौला	मण्डी		
	नाचन	नाचन			
	सुकेत	बलद्वाड़ा	झुंगी		
		कांगू	सरकाघाट		
		जैदेवी	सुकेत		
	जोगिन्द्रनगर	धर्मपुर	लड़भड़ोल		
		जोगिन्द्रनगर	उरला		
		कमलाह			
कुल्लू	कुल्लू	कुल्लू	पतलीकुहल	कुल्लू वन्य जीव	मनाली वन्य जीव परिक्षेत्र काईस और मनाली वन्य प्राणी शरण्य
		मनाली	नग्गर		
		भुट्टी			
	पार्वती	भून्तर	जरी		
		हुरला			
	बन्जार(सराज)	सैंज	तीर्थन		
	आनी	अरसू	नीथर		
लाहौल स्पीति	लाहौल	पटन	केलांग	स्पीति वन्य जीव	1. काजा वन्य जीव परिक्षेत्र (चद्रंताल वन्य प्राणी शरण्य को छोड़कर) 2. ताबो वन्य प्राणी परिक्षेत्र
किन्नौर	किन्नौर	कटगांव	निचार		
		भावानगर	मालिंग		
		पूह			
शिमला	शिमला	कोटी	मशोवरा		
		तारादेवी			
	ठियोग	वलसन	ठियोग		
		कोटखाई			
	रोहड़ू	जुब्बल	खशधार		
		सरस्वतीनगर	डोडराक्वार		
	चौपाल	बमटा	नेरवा		
		चौपाल	सरैन		
		कंडा	थरोच		
	रामपुर	सराहन			
कुल	**16**	**56**		**2**	**5 वन्य प्राणी वन परिक्षेत्र**

हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना

लक्ष्य

हिमाचल प्रदेश राज्य में सतत् सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए वनों से उत्पन्न परितन्त्र सेवाओं में सुधार किया जाना है।

परियोजना का ध्येय

परियोजना क्षेत्र में वन पारितन्त्रों का समझे–बूझे कार्य–कलापों द्वारा बेहतर प्रबन्धन प्रदान करना जिससे की वनों में वृद्धि हो, जैव–विविधता का सरंक्षण हो, समुदाय की आजीविका में सुधार एवं संस्थागत क्षमता का सुदृढ़िकरण हो।

परियोजना के घटक

सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबन्धन

जैव–विविधता संरक्षण

आजीविका सुधार सहयोग

संस्थागत क्षमता सुदृढ़िकरण

मुख्य विशेषताएं

01

जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA) द्वारा वित्त पोषित

02

परियोजना समझौता पर 29 मार्च, 2018 को
टोक्यो–जापान में हस्ताक्षर किए गए

03

800 करोड़ रूपये का कुल परिव्यय
(80% ऋण और 20 प्रतिशत राज्य का योगदान)

04

परियोजना अवधिः 10 साल (2018–2019 से 2027–2028), परियोजना को तीन चरणों में विभाजित किया गया है, प्रारंभिक चरण 2 वर्ष, कार्यान्वयन चरण 6 वर्ष और समापन चरण 2 वर्ष

05

परियोजना मुख्यालय शिमला एवं क्षेत्रीय कार्यालय कुल्लू और रामपुर में छः जिलों (किन्नौर, शिमला, बिलासपुर, मण्डी, कुल्लू और लाहौल एवं स्पिति) में कार्यान्वित

06

7 वन वृतों के 18 वन मण्डलों के
61 वन परिक्षेत्रों में कार्य किए जा रहे हैं

मुख्य गतिविधियां

समुदाय के साथ विचार-विमर्ष उपरान्त बनाई गई

460 सूक्ष्म योजनाओं

के अनुसार निम्नलिखित गतिविधियां क्रियान्वित की जा रही हैं:-

- अपघटित वन क्षेत्रों को सघन वन बनाने हेतु पौधारोपण
- चरागाह सुधार के कार्य
- मिट्टी एवं जल संरक्षण हेतु कार्य
- वनों का आग से बचाव
- खरपतवार नष्ट करने के कार्य
- मानव–वन्यप्राणी संघर्ष संबन्धित मामलों से निपटने हेतु 16 त्वरित कार्यवाही दल का सृजन
- जैव–विविधता गलियारे पर अध्ययन
- जैव–विविधता गणना के लिए बुनियादी अध्ययन
- सामुदायिक आजीविका सुधार गतिविधियां
- औषधीय पौधों पर आधारित आजीविका सुधार गतिविधियां जिसके लिए राज्य स्तर पर हिम जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ का गठन
- विभिन्न भागीदारों की क्षमता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण एवं शैक्षणिक यात्राएं आयोजित करने का प्रावधान

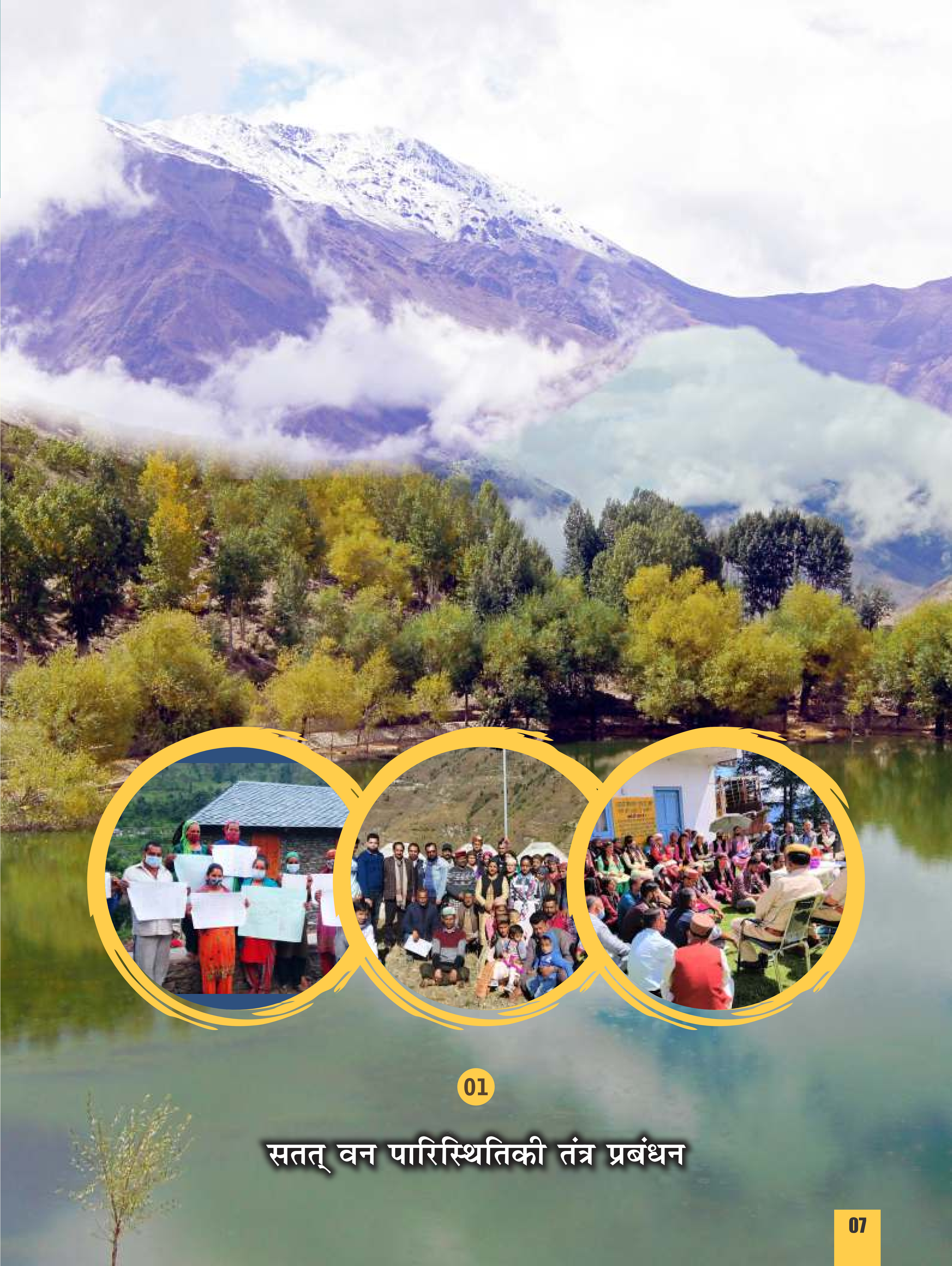

01

सतत् वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन

वन मंडल व
वन परिक्षेत्र मण्डी में जाइका
वानिकी परियोजना के अंतर्गत गठित **ग्राम वन विकास समिति टरोह** की जनरल हाउस की बैठक हुई। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों ने भी भाग लिया तथा समूह के सदस्यों के साथ मिलकर **सामाजिक अंकेक्षण समिति** का गठन किया गया।

"

शिमला वन मंडल के तारादेवी **वन परिक्षेत्र के पनेश व शिलारू** गांव में गठित ग्राम वन विकास समितियों की बैठक आयोजित की गई। इसमें परियोजना के कर्मचारी व परियोजना सलाहकार **श्री गिरीश भारद्वाज** भी शामिल हुए। जिसमें कि उन्होंने परियोजना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी समिति के सदस्यों और ग्रामवासियों के साथ साँझा की तथा समितियों में चलाई जा रही गतिविधियों व कार्यों का जायजा लिया।

"

“

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत निचली भटेड़ के **खंगर वार्ड** में परियोजना कर्मचारियों के सहयोग से स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया।

”

“

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र की **ग्राम पंचायत कुड्डी** में परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से ग्राम वन विकास समिति कुड्डी द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया।

“

रोहड़ू वन मंडल के खशधार **वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत खरसाली** में गठित ग्राम वन विकास समिति किण्डरी खोपटवारी के सदस्यों के साथ परियोजना कर्मचारियों ने **''ग्रामीण सहभागीता समीक्षा''** बैठक की।

”

“

वन मंडल शिमला के वन परिक्षेत्र तारा देवी में गठित **ग्राम वन विकास समिति शिलारू** के सदस्यों ने सामाजिक अंकेक्षण समिति का गठन किया।

”

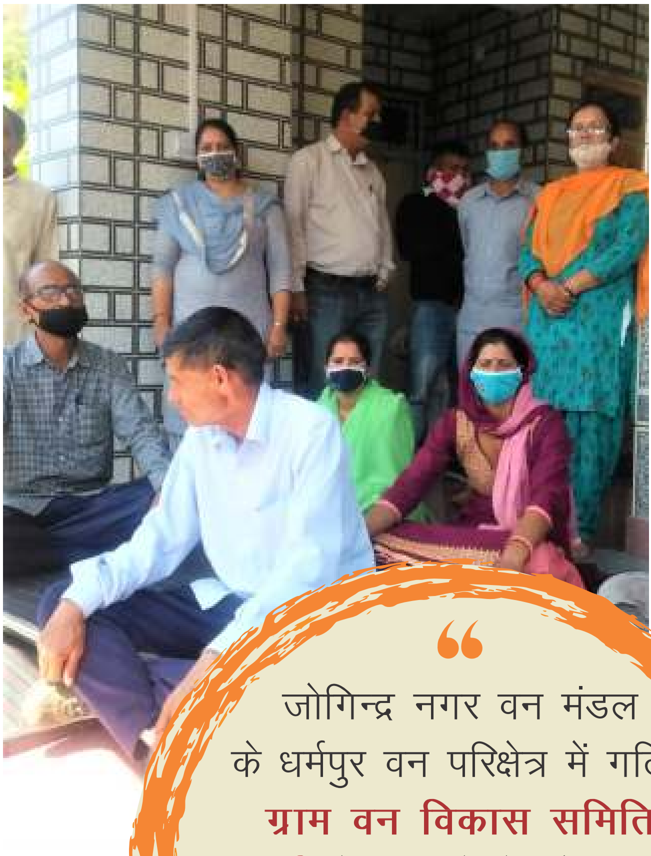

"जोगिन्द्र नगर वन मंडल के धर्मपुर वन परिक्षेत्र में गठित **ग्राम वन विकास समिति नवदुर्गा** के सदस्यों ने चौकी वार्ड में परियोजना कर्मचारियों के सहयोग से सामाजिक अंकेक्षण समिति का गठन किया।"

"मण्डी वन मंडल के कटौला वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत नवलय में ग्राम सभा आयोजित की। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों के सहयोग से **ग्राम वन विकास समिति निशु–परनु** द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में अनुमोदित किया गया।"

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने ग्राम पंचायत निहारखान बसला के वार्ड 4 व 5 के वन विकास समिति सदस्यों के साथ **''ग्रामीण सहभागीता समीक्षा''** बैठक की।

परियोजना के स्टाफ ने बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत बंदला में ग्राम वन विकास समिति बंदला के सदस्यों के साथ **''ग्रामीण सहभागीता समीक्षा''** बैठक की।

“

परियोजना के अंतर्गत बिलासपुर वन मंडल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समिति अमरपुर के शिवम स्वयं सहायता समूह ने मासिक बैठक आयोजित की। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों ने भी भाग लिया तथा समूह के सदस्यों के साथ **खाद्य प्रसंस्करण (सीरा और बड़ी)** की व्यापार योजना के बारे में कुछ मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की।

”

“

परियोजना के अधिकारियों व् कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मंडल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित **वन विकास समिति जीवन ज्योति बकरोआ** के सदस्यों के साथ **सामाजिक अंकेक्षण समिति** के गठन के संबंध में बैठक की।

”

“ बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत धार टटोह के वार्ड **2, 3 व 6 में गठित ग्राम वन विकास समिति धार** के सदस्यों के साथ परियोजना कर्मचारियों ने “**ग्रामीण सहभागीता समीक्षा**” बैठक की। ”

“

वन मंडल शिमला के वन परिक्षेत्र तारा देवी की **ग्राम वन विकास समिति शिलारू** ने **जनरल हाउस** की बैठक आयोजित की गई। जिसमें परियोजना के कर्मचारियों ने भी भाग लिया तथा समूह के सदस्यों के साथ विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की।

”

परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र की **ग्राम पंचायत सिरा** के वार्ड 1, 2 व 3 में वन विकास समिति सिरा के सदस्यों के साथ **"ग्रामीण सहभागीता समीक्षा"** बैठक की।

परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने सुंदरनगर वन मंडल के कमलाह वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत सारी के फहाद वार्ड में वन विकास समिति सारी के सदस्यों के साथ **"ग्रामीण सहभागीता की समीक्षा"** बैठक की।

सुकेत वन मंडल के कांगू परिक्षेत्र में जाइका परियोजना के कर्मचारियों ने ग्राम वन विकास समिति सनिहान के अंतर्गत गठित **जालपा स्वयं सहायता समूह** सदस्यों के साथ बैठक की। जिसमें परियोजना कर्मचारियों ने समूह के सदस्यों को विभिन्न आजीविका गतिविधियों, आय सृजन के संबंध में विस्तृत जानकारी दी तथा समूह में चलाई जा रही गतिविधियों पर भी चर्चा की।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत मण्डल प्रबंधन इकाई कार्यालय ठियोग में वन मण्डलाधिकारी व परियोजना के कर्मचरियों ने गैर सरकारी संगठन सदस्यों के साथ सूक्ष्म योजनाओं पर **समीक्षा बैठक** की। जिसके उपरांत गैर–सरकारी संगठन के सदस्य कोटखाई वन परिक्षेत्र (बैच–2) के बदरूणी –जकराडी और चोल–कुफरबाग वार्डों में सूक्ष्म योजनाओं के शेष कार्यों को पूरा करने के लिए चले गए।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत ठियोग वन मण्डल के बालसन वन परिक्षेत्र (बैच–1) में गठित **स्वयं सहायता समूह राधा कृष्ण मंदिर** और **ज्ञान ज्योति** द्वारा तैयार की गई वर्मीकम्पोस्टिंग की व्यावसायिक योजनाओं को आज आम सभा की बैठक में सर्वसम्मति से अनुमोदित करने के पश्चात अंतिम रूप दिया गया। इस बैठक में ग्राम वन विकास समिति के अध्यक्ष श्री जगदीश, पी.एम.यू. से श्री गिरीश ठाकुर, सेवानिवृत्त एच.पी.एफ.एस. डॉ. ओम पाल शर्मा , एस.एम.एस. और फॉरेस्ट गार्ड भी उपस्थित रहे।

पार्वती वन मंडल के हरला वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अधीन गठित ग्राम वन विकास समिति पियाशनी के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया।

बिलासपुर वन मण्डल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत गंधीर में ग्राम सभा आयोजित की गई जिसमें परियोजना अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग से **ग्राम वन विकास समिति संगम** द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में सर्वसमति से अनुमोदित कर दिया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत मण्डी वन मंडल के कटौला वन परिक्षेत्र की ग्राम पंचायत घराण में ग्राम सभा आयोजित की गई। जिसमें **ग्राम वन विकास समिति बिणधार–II** द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को ग्राम सभा में स्वीकृत किया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत मण्डी वन मंडल के **कटौला वन परिक्षेत्र** में परियोजना के कर्मचारियों ने ग्राम वन विकास समितियों से सम्बंधित ग्राम सभा की बैठक की। जिसमें परियोजना स्टाफ के सहयोग से समितियों द्वारा तैयार की गई सुक्ष्म विकास योजनाओं को अन्तिम रूप दिया गया तथा ग्राम सभा में अनुमोदित कर दिया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने किन्नौर वन मंडल के कटगांव वन परिक्षेत्र के अंतर्गत बैच–III में आने वाली **ग्राम वन विकास समितियों रोचरंग, कछरंग, करबे, शांगो, नाथपा और बैच–II की कंधार समिति** के सदस्यों के साथ बैठक की। इसके अतिरिक्त उन्होंने निचार वन परिक्षेत्र में गठित बैच–I की ग्राम वन विकास समितियों गारंग, त्रांण्डा, निगुलसारी,थाच, नान्स्पो, बारी और बैच–II की निगाणी समिति के सदस्यों के साथ भी बैठक का आयोजन किया। इन बैठकों के दौरान परियोजना के कर्मचारियों ने सदस्यों को सूक्ष्म योजनाएं बनाने तथा उनके कार्यान्वयन के बारे में विस्तृत चर्चा की। साथ ही सदस्यों को समितियों के तहत स्वयं सहायता समूहों के गठन के लिए भी प्रेरित किया गया।

जाइका वानिकी परियोजना द्वारा विगत वर्षों में ग्रामीण वन विकास समितियों के माध्यम से करवाए गए कार्यों का सर्वेक्षण **''Enviro Infra Solutions Pvt- Ltd.''** द्वारा किया गया। जिसके तहत वन मण्डल रोहड़ू में गठित वन समितियों के पदाधिकारियों व अन्य सदस्यों से समिति में किये गए कार्यों सम्बन्धी जानकारी ली गई।

दिनाँक 30.09.2021 को जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक **श्री नागेश कुमार गुलेरिया** ने परियोजना ने अंतर्गत वन मण्डल बिलासपुर के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र के पराहू में ग्राम वन विकास समितियों व स्वयं सहायता समूहों की **सयुंक्त बैठक** में भाग लिया और सदस्यों के साथ सीधे संवाद के माध्यम से परियोजना गतिविधियों सम्बन्धी प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने समूहों के द्वारा किए जा रहे कार्यों पर संतोष व्यक्त करते हुए जाइका परियोजना की ओर से हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

ठियोग वन मंडल के बलसन वन परिक्षेत्र के काशना और अपर मुंडु ग्राम वन विकास समितियों के अध्यक्ष की अध्यक्षता में आम सभा की बैठक आयोजित की गई। जिसमें निम्न गतिविधियाँ की गई :

- **बैच–1 के माइक्रोप्लान की शेष औपचारिकताएं पूरी की।**
- **3 सदस्यों, अर्थात 2 पुरुष सदस्यों और 1 महिला सदस्य के सामाजिक अंकेक्षण समूह (एसएजी) को सर्वसम्मति से अंतिम रूप दिया गया।**
- **वीएफडीएस की फील्ड मॉनिटरिंग पर एफटीयू के साथ विस्तार से चर्चा की।**

इस सभा में अध्यक्ष ग्राम वन विकास समिति, ई.सी. सदस्य, वार्ड फैसिलिटेटर, एस.एम.एस. व बीट अधिकारी श्री राकेश भी उपस्थित रहे।

मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से. ने आज चौपाल वन मण्डल का दौरा किया, इस

दौरान उन्होंने **चौपाल वन मंडल के अधिकारियों व कर्मचारियों तथा कण्डा वन परिक्षेत्र** के अंतर्गत गठित की गई ग्राम वन विकास समितियों और स्वयं सहायता समूहों के साथ बैठक की। जिसमें कि इन समितियों व समूहों के अंतर्गत की जा रही परियोजना सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों के बारे में विस्तृत चर्चा की।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत आनी वन मण्डल के निथर वन परिक्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समिति नौनी की आम सभा की बैठक आयोजित की गई। जिसमें परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग से वन विकास समिति द्वारा तैयार सूक्ष्म योजनाओं की शेष औपचारिकताएं पूरी की गई और उन्हें अनुमोदित कर दिया गया। साथ ही **मशरूम की खेती और पनीर बनाने** की व्यावसायिक योजनाओं को भी आम सभा में प्रस्तुत और अनुमोदित किया गया। इस बैठक में सर्वसम्मति से सामाजिक अंकेक्षण समिति का भी गठन किया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत बिलासपुर वन मण्डल के **झंडूत्ता वन परिक्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समिति बलघार की मासिक बैठक आयोजित की गई।** जिसमें परियोजना कर्मचारियों ने समूह के सदस्यों को विभिन्न आजीविका गतिविधियों, आय सृजन के संबंध में विस्तृत जानकारी दी तथा समूह में चलाई जा रही गतिविधियों पर भी चर्चा की। इस बैठक में परियोजना के कर्मचारियों, समिति के स्वयं सहायता समूह सदस्यों व ग्रामीणों ने भी भाग लिया।

बिलासपुर वन मंडल के सदर वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने परियोजना के अंतर्गत गठित **ग्राम वन विकास समिति बाग्गर सलाणु खंगर (बी.एस.के.)** के सदस्यों के साथ बैठक की, जिसमें सामुदायिक विकास, सामाजिक अंकेक्षण (सोशल ऑडिट) समिति का गठन एवं आजीविका सुधार के बारे में चर्चा की गई और समूह में चलाई जा रही गतिविधियों का जायजा लिया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मंडल के घुमारवीं एवं स्वारघाट वन परिक्षेत्रों में परियोजना के अंतर्गत गठित **शिवम, संतोषी व शिव शक्ति स्वयं सहायता समूह** के सदस्यों के साथ बैठक की। इस दौरान परियोजना कर्मचारियों ने सदस्यों के साथ सामुदायिक विकास, आजीविका सुधार के बारे में चर्चा की गई और समूहों में चलाई जा रही गतिविधियों का जायजा लिया गया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत ठियोग वन मंडल के बलसन वन परिक्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समिति **काशना, अपर मुंडू एवं निचले मुंडू की आम सभा की बैठक** आयोजित की गई। इस बैठक में निम्न गतिविधियाँ की गई :

- ग्रामीणों को **"नुक्कड़ नाटक"** कार्यक्रम के माध्यम से परियोजना की जानकारी दी गई।
- स्वयं सहायता समूहों से संबंधित रजिस्टरों को भरने के विषय में महिला समूहों के साथ–साथ वार्ड फैसिलिटेटरों को जानकारी दी गई और अपूर्ण वी.एफ.डी.एस. रजिस्टरों पर एफ.टी.यू. के साथ विस्तार से चर्चा की गई और उन्हें पूरा करने की जानकारी प्रदान की गई।

इस सभा में अध्यक्ष वीएफडीएस, ईसी सदस्य, वार्ड फैसिलिटेटर, एसएमएस व बीट अधिकारी भी उपस्थित रहे।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मण्डल के सदर वन परिक्षेत्र में गठित **सीहरा ग्राम वन विकास समिति** के साथ बैठक की जिसमें सर्वसम्मति से सोशल ऑडिट कमेटी का गठन किया गया तथा स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के साथ व्यावसायिक योजनाओं के निर्माण के बारे में भी विस्तृत चर्चा की।

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया भा.व.से. ने बिलासपुर वन मण्डल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र का दौरा किया। उन्होंने सबसे पहले स्वारघाट वन परिक्षेत्र के अंतर्गत गठित सभी ग्राम वन विकास समितियों व स्वयं सहायता समूहों से बातचीत की तथा उनकी समस्यों का मौके पर ही समाधान किया। इसके पश्चात उन्होंने वृतीय पौधशाला जकातखाना का दौरा किया तथा तथा तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण किया।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने सुकेत वन मण्डल के बलद्वाड़ा वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित **ग्राम वन विकास समिति घनेहरा** के सदस्यों के साथ बैठक की। इस दौरान परियोजना कर्मचारियों ने सदस्यों के साथ व्यावसायिक योजनाओं, सामुदायिक विकास, आजीविका सुधार के बारे में विस्तृत चर्चा की तथा समूहों में चलाई जा रही गतिविधियों का भी जायजा लिया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत ठियोग वन मंडल के बालसन वन परिक्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समिति अपर मुंडू एवं लोअर मुंडू की आम सभा की बैठक अपर मुंडू में आयोजित की गई । इस बैठक में दोनों समितियों के कुल **4 स्वयं सहायता समूहों (जय माँ काली, जय माँ दुर्गे, भवानी और जय माँ चामुण्डा)** ने भी भाग लिया तथा परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग से निम्न गतिविधियाँ की:

- ✓ ग्राम वन विकास समितियों द्वारा तैयार व्यावसायिक योजनाओं की शेष औपचारिकताएं पूरी की गई और उन्हें अनुमोदित कर दिया गया।
- ✓ स्वयं सहायता समूहों से सम्बंधित रजिस्टरों को भरने के विषय में समूहों को जानकारी दी गई।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत बंजार वन मण्डल के सैंज वन परिक्षेत्र में गठित ग्राम वन विकास समिति भल्लान की आम सभा की बैठक आयोजित की गई। इस दौरान परियोजना अधिकारियों व कर्मचारियों ने सदस्यों के साथ व्यावसायिक योजनाओं, सामुदायिक विकास, आजीविका सुधार के बारे में विस्तृत चर्चा की तथा समिति के अधीन **स्वयं सहायता समूहों/साँझा रुचि** समूहों के गठन के लिए भी प्रेरित किया। साथ ही परियोजना कर्मचारियों ने समूहों में चलाई जा रही गतिविधियों का भी जायजा लिया और सदस्यों को आ रही समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मण्डल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र की **ग्राम वन विकास समिति कोठी टोबका** के जागृति स्वयं सहायता समूह के साथ बैठक की। इस बैठक के दौरान परियोजना कर्मचारियों ने सदस्यों के साथ समूह में चलाई जा रही गतिविधियों का जायजा लिया तथा आय सृजन गतिविधियों के बारे में विस्तृत चर्चा की।

बिलासपुर वन मण्डल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र में गठित **ग्राम वन विकास समिति दाहड़** के सदस्यों के साथ जाइका वानिकी परियोजना कर्मचारियों ने बैठक की। जिसमें उन्होंने समूहों में चलाई जा रही गतिविधियों का जायजा लिया।

परियोजना कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मण्डल के स्वारघाट वन परिक्षेत्र में गठित **स्वयं सहायता समूह जय मां नैना व जय मां ज्वाला** के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने समूहों में किये जा रहे कार्यों का जायजा लिया तथा आजीविका गतिविधियों पर भी विस्तृत चर्चा की।

बंजार वन मण्डल के सैंज वन परिक्षेत्र में गठित **ग्राम वन विकास समिति दुशाद** की आम सभा की बैठक आयोजित की गई। इस दौरान परियोजना कर्मचारियों ने सदस्यों के साथ आजीविका सुधार के बारे में विस्तृत चर्चा की तथा समिति के अधीन स्वयं सहायता समूहों के गठन के लिए भी प्रेरित किया। परियोजना कर्मचारियों ने साथ ही समितियों में चलाई जा रही गतिविधियों का भी जायजा लिया और सदस्यों को आ रही समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मण्डल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र की **ग्राम वन विकास समिति बाबा सिद्ध गोदडीया रोहिन** के तहत गठित स्वयं सहायता समूह जागृति के सदस्यों के साथ बैठक की। जिसमें उन्होंने सदस्यों के साथ समूह में की जा रही आजीविका गतिविधियों, तैयार किए जा रहे उत्पादों व उनके विपणन पर विस्तार से चर्चा की तथा आवश्यक मार्गदर्शन दिए।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मण्डल के सदर वन परिक्षेत्र की **सिहरा ग्राम वन विकास समिति** के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने उपस्थित सदस्यों के साथ समूह में चलाई जा रही गतिविधियों का जायजा लिया तथा आय सृजन गतिविधियों के बारे में विस्तृत चर्चा की। साथ ही उन्होंने सदस्यों को आ रही समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मण्डल के सदर वन परिक्षेत्र की **कुड्डी ग्राम वन विकास समिति** के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने उपस्थित सदस्यों के साथ समूह में चलाई जा रही गतिविधियों का जायजा लिया तथा आय सृजन गतिविधियों के बारे में विस्तृत चर्चा की। साथ ही उन्होंने सदस्यों को आ रही समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया।

श्री नागेश गुलेरिया, अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने आज वन मण्डल मण्डी के वन परिक्षेत्र कोटली का दौरा किया। जहाँ उन्होंने **कोटली वन परिक्षेत्र** के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समितियों व स्वयं सहायता समूहों के पदाधिकारियों के साथ परियोजना के सौजन्य से चलाई जा रही विकासात्मक गतिविधियों की प्रगति के सम्बन्ध में विस्तृत विचार–विमर्श किया। इस अवसर पर वनमण्डलाधिकारी मण्डी, रिटायर्ड एच.पी.एफ.एस., रिटायर्ड आर.ओ. तथा वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से. ने मण्डी वन मण्डल के **द्रंग वन परिक्षेत्र** में गठित वन विकास समितियों व स्वयं सहायता समूहों के साथ बैठक की। इस दौरान उन्होंने परियोजना के तहत किए जा रहे विकासात्मक कार्यों को लेकर चर्चा की व समूहों द्वारा चलाई जा रही आजीविका गतिविधियों की प्रगति का भी जायजा लिया और सदस्यों से बातचीत करके उनकी समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया। इस अवसर पर वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

दिनांक 30.12.2021 को **मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश गुलेरिया भा.व.से.** की अध्यक्षता में मण्डी वन वृत्त में चल रहे जाइका वानिकी परियोजना के कार्यो की समीक्षा बैठक जिला परिषद भवन भ्यूली मण्ड़ी में आयोजित की गई। मण्ड़ी वन वृत के अर्न्तगत चार वन मण्ड़लो में जाइका वानिकी परियोजना के कार्य चल रहे हैं। इस बैठक में इन सभी वन मण्डलों के वन मण्ड़लाधिकारी **श्री वासू डोगर**, वन मण्ड़ल अधिकारी मण्डी, **श्री राकेश कटोच**, वन मण्ड़ल अधिकारी जोगिन्द्रनगर, **श्री सुभाष पराशर**, वन मण्ड़ल अधिकारी सुकेत, **श्री तीर्थ राज धीमान**, वन मण्डल अधिकारी नाचन व **श्री अम्बरीश शर्मा**, वन मण्ड़ल अधिकारी मुख्यालय, वन वृत्त मण्ड़ी उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त वन विभाग के चार वन मण्ड़लों के वन परिक्षेत्र अधिकारी, उप–वन राजिक, वन रक्षक व जाइका परियोजना के कर्मचारी भी उपस्थित रहे। बैठक में मुख्य परियोजना निदेशक द्वारा जाइका वानिकी परियोजना के तहत चल रहे वानिकी, आजिविका वर्धन तथा अन्य कार्यों की समीक्षा की गई। इस बैठक में मुख्य परियोजना निदेशक द्वारा निर्देश दिए गए कि परियोजना के कार्यो की प्रगति को बढ़ाया जाए जिससे कि वनों की दशा और लागों की आर्थिकी में सुधार हो। बैठक में स्वयं सहायता समुहों की भुमिका व अन्य विभागो के साथ कार्यों की Convergence के बारे में भी मुख्य परियोजना निदेशक द्वारा जोर दिया गया।

रामपुर वन मण्डल के सराहन वन परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाली ग्राम वन विकास समितियों व उनके तहत गठित स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के लिए जाइका वानिकी परियोजना की **दो दिवसीय जागरुकता कार्यक्रम** का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में परियोजना प्रबंधन इकाई (जाइका) शिमला से श्रीमति रिचा मेहता एंव श्री विनोद शर्मा ने भी भाग लिया तथा समितियों के तहत किये जा रहे कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने समूहों में चलाई जा रही आजीविका गतिविधियों को और गति प्रदान करने, समूहों को सशक्त करने तथा उनकी आय वृद्धि पर बल दिया। इस अवसर पर सराहन के रेंज अधिकारी, डिप्टी रेंजर, गरिमा वर्मा (विषय विशेषज्ञ) और वन विभाग के अन्य कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

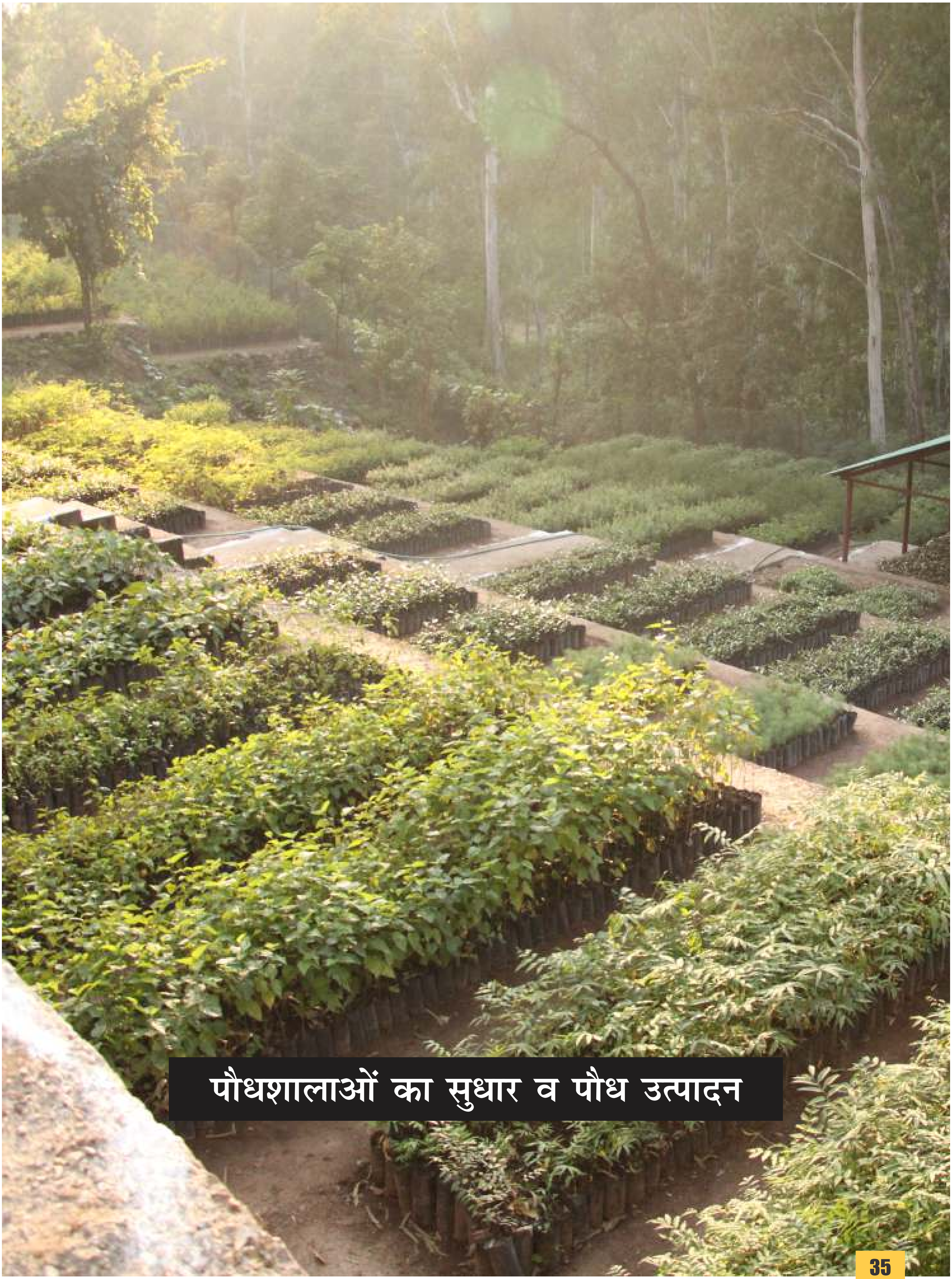

पौधशालाओं का सुधार व पौध उत्पादन

वन मंडल व वन परिक्षेत्र जोगिन्दरनगर के **चौंतड़ा पौधशाला** में विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के पौधे उगाये जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में मण्डी की जाइका मंडल प्रबंधन इकाई ने पौधशाला का दौरा किया तथा तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण किया।

जाइका वानिकी परियोजना के जड़ी बूटी प्रकोष्ठ टीम ने परियोजना द्वारा तैयार की गई **कमांद पौधशाला** का दौरा किया। इस पौधशाला में आमला, भेड़ा, रीठा व कई अन्य प्रकार की प्रजातियों की पौध तैयार की जा रही है। परियोजना टीम ने जाइका नर्सरी स्टाफ को अष्टवर्ग औषधियों के महत्त्व के बारे में बताया तथा उन्हें नर्सरी तकनीक द्वारा उगाने सम्बन्धित जानकारी भी दी।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत पी.एम.यू. स्तर पर गठित जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ रमेश चंद कंग ने सुकेत वन मण्डल की **कटौला पौधशाला** का दौरा किया तथा तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण किया। उन्होंने पौधशाला में मौजूद अधिकारियों व कर्मचारियों को हरड़, अमला, रीठा इत्यादि औषधीय पौध तैयार करने पर भी जोर दिया। इस मौके पर रिटायर्ड (एच.पी.एफ.एस) श्री वी.पी. पठानिया, सुकेत वन मण्डल व कटौला परिक्षेत्र के अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

दिनाँक 30.09.2021 को जाइका वानिकी परियोजना के मुख्य परियोजना निदेशक श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने परियोजना ने अंतर्गत वन मण्डल बिलासपुर के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र में निर्मित अत्याधुनिक **पौधशाला बागड़ा** का दौरा किया तथा पौधशाला में तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण किया।

कुल्लू वन वृत्त के अंतर्गत जाइका वानिकी परियोजना के अधीन **मौहल स्थित केंद्रीय स्तर की अत्याधुनिक पौधशाला** में विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के पौधे उगाये जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में परियोजना मुख्यालयशिमला से वानिकी और जैव–विविधता की प्रोग्राम मैनेजर श्रीमती कौशलया ने पौधशाला का दौरा किया तथा तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण किया तथा इस सम्बन्ध में जानकारी ली।

श्री नागेश कुमार गुलेरिया, अतिरिक्ता प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने ठयोग वन मण्डल की **वृत्त स्तरीय पौधशाला सैंज** का दौरा किया। उन्होंने पौधशाला का निरीक्षण किया और जाइका परियोजना के तहत तैयार की जा रही पौध की प्रजातियों तथा बुनियादी ढांचों के संबंध में कुछ सुधारों का सुझाव दिया। नवंबर, 2021 के दूसरे सप्ताह में **PIHPFEM&L** का **एक पर्यवेक्षण मिशन** शिमला वृत्त के परियोजना क्षेत्रों सहित हिमाचल का दौरा करने वाला है। इस अवसर पर बलसन, कोटखाई, ठियोग रेंज के डीएमयू, एफटीयू के सभी कर्मचारी मौजूद थे।

“

जाइका समीक्षा मिशन के मुख्य विकास विशेषज्ञ श्री विनीत सहाय सरीन ने सुकेत वन मण्डल के कांगू वन परिक्षेत्र के **भवाना** में निर्मित **अत्याधुनिक पौधशाला** का दौरा किया। जिसमें उन्होंने तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण तथा समीक्षा की। इस मौके पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश गुलेरिया भा.व.से., हि.प्र., डॉ आर.सी. कंग निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ), वन मंडलाधिकारी सहित वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी मौजूद रहे।

जाइका का पर्यवेक्षण मिशन दल श्री अकमीनों कैमों, सीनियर रिप्रेजेन्टेटिव जाइका इंडिया तथा श्री विनीत सहाय सरीन, मुख्य विकास विशेषज्ञ की अगुवाई में **ठियोग वन मण्डल की सैंज वृत्त स्तरीय जाइका पौधशाला** का दौरा किया तथा तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण व समीक्षा की। इस अवसर पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया भा.व.से., निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ) डॉ आर.सी. कंग, अतिरिक्त परियोजना निदेशक संगीता महला, वनमंडलाधिकारी ठियोग सहित वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

सामुदायिक विकास कार्य

“ जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत वन मंडल रोहडू के सरस्वती नगर वन परिक्षेत्र के छाजपुर घाटी में गठित ग्राम वन विकास समिति द्वारा **सभाड गांव में खेल मैदान की सुरक्षा दीवार** लगाई जा रही है।

चौपाल वन मंडल के नेरवा वन परिक्षेत्र में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत गठित **ग्राम वन विकास समिति बदीच** में सामुदायिक विकास कार्यों के तहत **पैदल पथ एवं पुल** का निर्माण किया गया।

परियोजना के अंतर्गत आनी वन मण्डल के निथर **वन परिक्षेत्र के कटमोर, जाझर और शारशा** ग्राम वन विकास समितियों में सौर ऊर्जा चालित गलियों की लाइट्स (street lights) लगाई गई।

02

जैव - विविधता संरक्षण

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने वन्यप्राणी परिक्षेत्र मनाली की **जैव विविधता प्रबंधन समिति काइस** के अंतर्गत गठित जैव विविधता प्रबंधन उप–समितियों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। इस बैठक में सलाहकार श्री पी. सुतार, परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला ने भी भाग लिया तथा उपस्थित सभी सदस्यों के साथ सतोयामा पर बातचीत की, उनकी प्रतिक्रिया ली और अपने अनुभव को भी साझा किया।

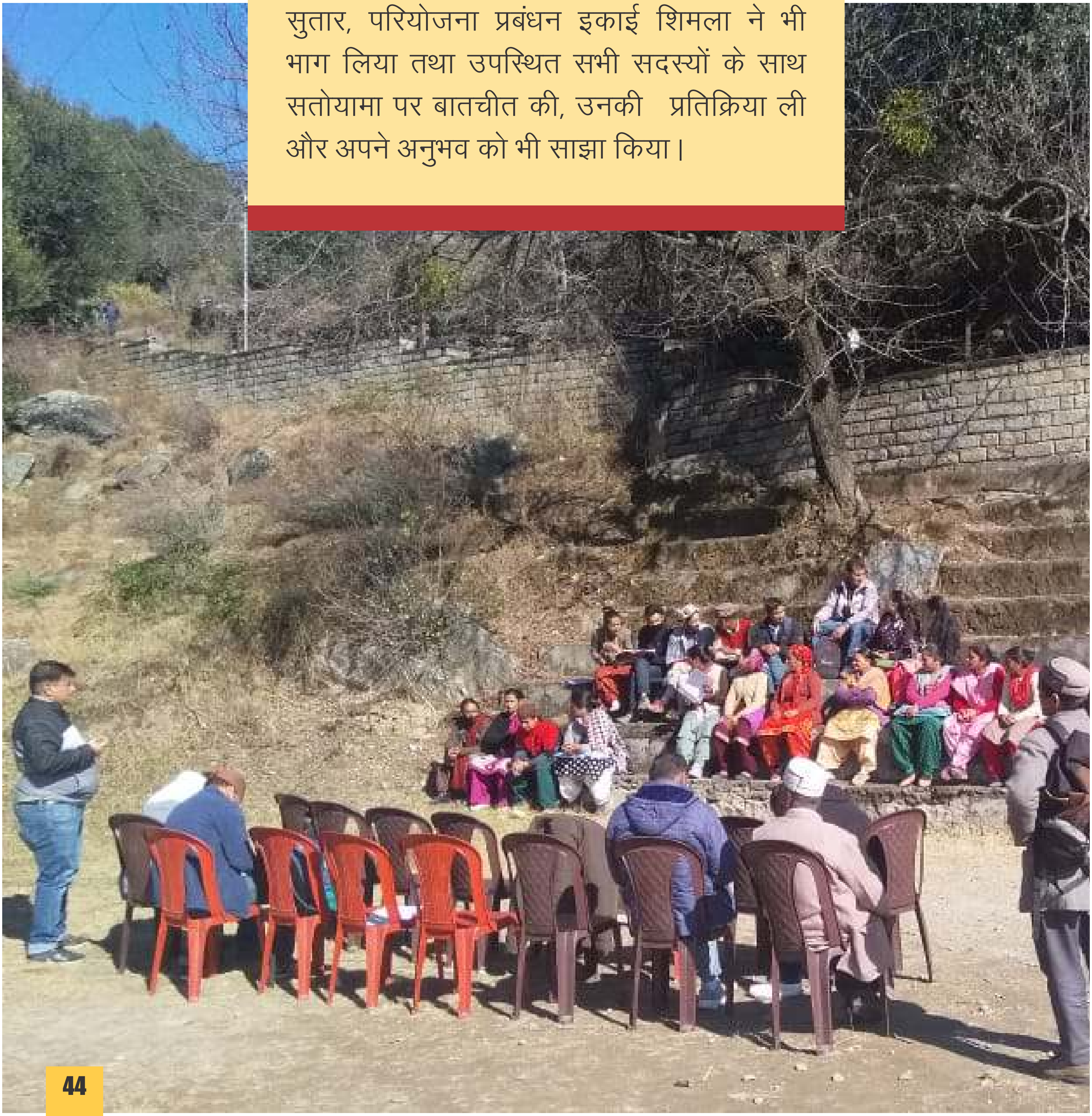

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने **वन्यप्राणी परिक्षेत्र मनाली** की **जैव विविधता प्रबंधन उप–समिति धाराघोट** के अंतर्गत गठित नारीशक्ति और ओम सिंघमल स्वयं सहायता समूहों के साथ बैठक की तथा व्यावसायिक योजनाओं के बारे में विस्तृत चर्चा की।

वन्यप्राणी परिक्षेत्र सुंदरनगर में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत गठित **जैव विविधता प्रबंधन समिति बोबर** की उप समिति का गठन किया गया।

परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बिलासपुर वन मण्डल के झंडूत्ता वन परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले घंडीर गांव का दौरा किया तथा ग्रामीणों के साथ बैठक की। इसमें परियोजना स्टाफ ने लोगों को **चील पाइन नीडल संग्रह** के लिए प्रेरित किया।

वन मंडल ठियोग के बालसन वन परिक्षेत्र के बैच–1 वार्ड समन्वयकों द्वारा **सेंट्रल नर्सरी,** सैंज में उगाई जा रही विभिन्न पौधों की प्रजातियों और उनकी उपयोगिता से सम्बंधित स्वयं को परीचित करने के लिए दौरा किया।

सतोयामा

जाइका वानिकी परियोजना वैश्विक सतोयामा पहल में शामिल हुआ है जिसके अन्तर्गत कैस और खोखन वन्यजीव अभ्यारण्यों में साइट विशिष्ट गतिविधियों का क्रियान्वयन शुरू किया गया है।

पृष्ठभूमि:

सतोयामा पहल, एक अंतरराष्ट्रीय प्रयास है जो पारिस्थितिकी तंत्र दृष्टिकोण सहित मौजूदा मौलिक सिद्धांतों के अनुरूप गतिविधियों को बढ़ावा देता है। इसकी मूल दृष्टि समाज का प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना है जोकि सकारात्मक मानव–प्रकृति संबंधों पर निर्मित है। जाइका द्वारा वित्तपोषित हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (पी.आई. एच.पी.एफ.ई.एम. एंड एल.) के तहत सतोयामा पहल के लिए एक अंतरराष्ट्रीय साझेदारी शुरू की गई है जिसमें जैव विविधता और लाभार्थियों के लिए सामाजिक–पारिस्थितिक उत्पादन परिदृश्य के प्रचार की दिशा में पी.एफ.एम. मोड के तहत सतोयामा गतिविधियों को पूरा किया जाएगा।

दृष्टिकोण:

व्यावहारिक रूप से प्राकृतिक संसाधनों का सतत् उपयोग और प्रबंधन–पांच पारिस्थितिक और सामाजिक–आर्थिक दृष्टिकोणों को शामिल करना है:

- पर्यावरण की वहन क्षमता और लचीलेपन के भीतरी संसाधनों का उपयोग
- प्राकृतिक संसाधनों का चक्रीय उपयोग
- स्थानीय परंपराओं, संस्कृतियों के मूल्य और महत्व की पहचान
- प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के टिकाऊ और बहु–क्रियात्मक प्रबंधन में बहु–हितधारक भागीदारी और सहयोग
- गरीबी में कमी, खाद्य सुरक्षा, स्थायी आजीविका और स्थानीय समुदाय सशक्तिकरण सहित स्थायी सामाजिक–अर्थव्यवस्था में योगदान

इन गतिविधियों को कुल्लू और स्पीति वन्य प्राणी मण्डलों दोनों में संबंधित जैव विविधता प्रबंधन समिति (बी.एम.सी.) के तहत 60 बी.एम.सी उप–समितियों में लागू किया जाएगा। यह लेख कुल्लू वन्य प्राणी मण्डल, हिमाचल प्रदेश के तहत कैस और खोखन वन्य प्राणी अभ्यारण्यों के भीतर 6 बी.एम.सी. के तहत 18 उप–समितियों में कार्यान्वयन के कार्यक्रम विवरण प्रदान करता है। साइट का विवरण नीचे तालिका –1 में दिया गया है:

तालिका –1: कैस और खोखन वन्य प्राणी अभ्यारण्यों के तहत सतोयामा पहल के लिए प्रस्तावित साइटें

वन्य प्राणी मण्डल	परिक्षेत्र	वन्य प्राणी अभ्यारण्य	जैव विविधता प्रबंधन समिति	बी.एम.सी उप–समिति
कुल्लू	कुल्लू	कैस	कैस	कैस, सेऊबाग, धाराघोट
			सोयाल	सोयल–I, कोटाधार, सोर
			करार्सु	टंडला, करार्सु, बिष्टबेहर
			गाहर	सेऊबाग–II, गाहर, फार्मेह
		खोखन	नेउली	नेउल, छावारा, शोगी
			शिलिराजगिरी	जनाहल, लोट, बखाली

लोट बी.एम.सी. उप–समिति, खोखन वन्य प्राणी अभ्यारण्य के सदस्यों के साथ परामर्श बैठक करते परियोजना कर्मचारी

इसी तरह की गतिविधियों को कुल्लू मण्डल प्रबंधन इकाई (डी.एम.यू.) के तहत बखली (सुंदरनगर वन परिक्षेत्र) और मनाली वन्य प्राणी अभ्यारण्य (मनाली वन्य प्राणी परिक्षेत्र) और स्पीति वन्य प्राणी मण्डल के तहत 2 वन्य प्राणी अभ्यारण्यों (काजा और स्पीति) के तहत परियोजना अवधि में क्रमिक विकास के आधार पर पूर्ण किया जाएगा।

गतिविधियांः

गतिविधियों को निम्नलिखित दो स्तरों पर लागू किया जाएगाः

- ✓ सूक्ष्म स्तर (बी.एम.सी. उप–समिति स्तर)
- ✓ लैंडस्केप स्तर (कैस और खोखन वन्य प्राणी अभ्यारण्य स्तर)

हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना (जाइका वित्तपोषित) के विभिन्न हितधारकों के साथ परामर्श के बाद सूक्ष्म और परिदृश्य (लैंडस्केप) स्तरों पर निम्नलिखित गतिविधियों को निष्पादित करने की योजना है।

सूक्ष्म स्तर की गतिविधियाँ

- बान, मोरू, किकर, बेउल, साडे, अरु जैसी चौड़ी पत्ती वाली प्रजातियों का रोपण
- देवता वन (शमशाद और देवदार) के आसपास महत्वपूर्ण प्रजातियों का वृक्षारोपण
- राखल, बुरांश और जंगली जामुन का वृक्षारोपण
- रोपित प्रजातियों का रखरखाव
- जल संरक्षण और सिंचाई के लिए जल संचयन संरचनाएं
- नागछतरी, वन काकड़ी, पाटीश, कारू, चारो, साला–मिश्री, निहानु, दनाख्श, पांजा, जंगल लेहशुन आदि औषधीय पौधों की खेती।
- एनटीएफपी के अति–शोषण की रोकथाम पर जागरूकता
- गुच्छी का संरक्षण
- स्थानीय युवाओं के माध्यम से जंगल की आग को काबू करना
- जैविक खेती और वर्मी कम्पोस्टिंग को बढ़ावा देना

- महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा जैविक कीटनाशकों की तैयारी
- पारंपरिक फसलों जैसे कोडरा, कौनी, सिरियारा, ताक आदि का पुनरुद्धार।
- तृतीय श्रेणी के वनों में नेपियर घास की खेती
- मवेशियों के लिए खनिज मिश्रण की आपूर्ति
- पिछवाड़े में होम हर्बल गार्डन का विकास
- औषधीय पौधों का प्रसंस्करण
- बुनाई और हथकरघा प्रचार
- उत्पादों के आतिथ्य और व्यापार पर कौशल वृद्धि

लैंडस्केप स्तर की गतिविधियाँ

- पाइरस पशिया जैसे जंगली फलों का रोपण
- सौर बाड़
- अल्पाइन घास के मैदानों में घास के बीज बोना
- जैविक विरासत स्थल की पहचान और उसका संरक्षण
- वन्य जीवों के लिए जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण
- फुतस्सर झील (कैस वन्य प्राणी अभ्यारण्य), नंगदथु जलप्रपात और झील (खोखन वन्य प्राणी अभ्यारण्य) का पुनरुद्धार
- तीतरों के लिए निर्गल का वृक्षारोपण
- वन्य प्राणी अभ्यारण्यों पर ईंधन की लकड़ी के दबाव में कमी
- ट्रेकिंग और कैम्पिंग कार्यक्रम
- ट्रेक के प्रवेश के दौरान सूचनाध्व्याख्या केंद्र की स्थापना
- आवास प्रबंधन के लिए स्थानीय ग्रामीणों द्वारा समूह गश्ती
- चरागाहों (गुज्जर) को प्रतिबंधित करके वन्यजीवों को संचारी रोगों का निषेध
- मान्यता प्राप्त संस्थानों से पारिस्थितिकी पर्यटन, प्रकृति जागरूकता (वनस्पति और जीवों की पहचान), ट्रेकिंग गाइड, खाना पकाने आदि पर प्रशिक्षण
- शिविर स्थलों के पास झोपड़ियों की मरम्मत
- कैस और खोखन वन्य प्राणी अभ्यारण्य के लिए पैम्फलेट, बुकलेट और प्रदर्शन सामग्री का विकास
- प्रदर्शन के लिए साइनेज, होर्डिंग और जैव विविधता जागरूकता सामग्री

सोयल बी.एम.सी. उप–समिति, कैस वन्य प्राणी अभ्यारण्य के सदस्यों के साथ परामर्श बैठक करते परियोजना कर्मचारी

GIS

डिफरेंशियल ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (DGPS) की सहायता से जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत आने वाले विभिन्न क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया जा रहा है। इसी के चलते सर्वेक्षण टीम के साथ परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला और मंडल प्रबंधन इकाई मण्डी के कर्मचारी ने द्रंग वन परिक्षेत्र के माथा न्यूल ग्राम वन विकास समिति का सर्वेक्षण किया गया और समिति की सीमारेखा व पौधारोपण की सीमा को चिन्हित किया।

डिफरेंशियल ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (DGPS) की सहायता से जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत आने वाले विभिन्न क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया जा रहा है। इसी के चलते आज सर्वेक्षण टीम के साथ प्रोग्राम मैनेजर (GIS/MIS), **परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला और मण्डल प्रबंधन इकाई चौपाल** के कर्मचारियों ने कण्डा वन परिक्षेत्र के नोहरा ग्राम वन विकास समिति की सीमारेखा व पौधारोपण की सीमा को चिन्हित किया।

DGPS की सहायता से जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत आने वाले विभिन्न क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया जा रहा है। इसी के चलते आज सर्वेक्षण टीम के साथ प्रोग्राम मैनेजर (GIS/ MIS), **परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला और वन्यप्राणी मण्डल स्पीति** के कर्मचारियों ने ताबो वन्यप्राणी परिक्षेत्र के अंतर्गत गठित जैव विविधता प्रबंधन उप–समिति ग्यु की सीमारेखा व पौधारोपण की सीमा को चिन्हित किया।

लक्ष्यः

आजीविका समर्थन, आसान बाजार पहुंच और गैर–काष्ठ वन उत्पादों (एन.टी.एफ.पी.) का संरक्षण (इन सीटू/एक्स सीटू में) करना।

जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ के कार्यः

- परियोजना हस्तक्षेप क्षेत्र में विशेष रूप से औषधीय पौधों (एनटीएफपी) के निरंतर निकास को विनियमित करना।
- युवाओं को स्थायी आजीविका और आय सृजन के अवसर प्रदान करने के लिए बढ़ावा देने वाली कुछ विशिष्ट प्रजातियों के एक्स–सीटू प्रसार को मानकीकृत करना।
- समूहों में क्लस्टर स्तर पर ''हिम जड़ी–बूटी सहकारी समितियों'' का गठन करना।
- उच्च मूल्य वाले प्रमुख औषधीय पौधों सहित चयनित एनटीएफपी के मूल्यवर्धन पर कार्य करना।
- चुने हुए उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों को उगाने के लिए कृषि तकनीक विकसित करने और सतत् दोहन मापदण्ड तैयार करने के लिए अनुसन्धान संस्थाओं से तालमेल स्थापित करना।
- उत्पादक संगठनों के प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण तथा व्यापार विकास सेवाओं की सुविधा प्रदान करना
- औषधीय पौधों की खरीद और व्यापार के लिए स्ट्रीमलाइन मार्केटिंग चैनल विकसित करना और हिमाचल प्रदेश में औशधीय पौधों के उत्पादन के लिए एक ब्रांड बनाकर और विभिन्न स्तरों पर उनके प्रचार के लिए कार्य करना।
- संरक्षण के लिए अग्रणी औषधीय पौधों का सतत प्रबंधन करना।
- उद्योगों/फार्मास्युटिकल्स के लिए उपज की बिक्री योग्य मात्रा उत्पन्न करने के लिए उच्च मूल्य के औषधीय पौधों की खेती करना।
- अनुसंधान और विकास गतिविधियों को बढावा देना।
- नीतियों में परिवर्तन तथा औषधीय पौधों के विकास के लिए कानूनी ढांचा तैयार करना।

प्रकोष्ठ की संरचनाः

- ✓ निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ)
- ✓ प्रबंधक (उद्यम विकास)
- ✓ प्रबंधक (विपणन)
- ✓ एम.आई.एस. एसोसिऐट

प्रकोष्ठ की कार्य योजनाः

वर्तमान में, हिमाचल प्रदेश में चिकित्सा महत्व से सम्बन्धित लगभग 643 प्रजातियां हैं। हालाँकि, शुरू में व्यावसायिक महत्व की कुछ प्राथमिकता वाली प्रजातियों का चयन किया गया है और वन एवम् निजी भूमि पर उनकी खेती की जा रही है।

इन प्रजातियों का आकलन निम्नलिखित अनुसंधान संस्थानों द्वारा किए गए सर्वेक्षण के माध्यम से किया गया हैः

- जी.बी. पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण और सतत विकास संस्थान (एन.आई.एच.ई.–अल्मोड़ा और कुल्लू)
- वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद–हिमालय जैव संसाधन प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.एस.आई.आर.–आई.एच.बी.टी.) पालमपुर
- हिमालयी वन अनुसंधान संस्थान (एच.एफ.आर.आई), शिमला
- हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

जड़ी–बूटी प्रकोष्ठ द्वारा तैयार आजीविका मॉडल :

गवर्निंग बॉडी द्वारा अनुमोदित मॉडल :

- ✓ पामारोसा घास (डीएमयू बिलासपुर)
- ✓ ब्रिकेट्स में चिल पाइन सुइयों का संग्रह, संपीड़न (डीएमयू बिलासपुर)
- ✓ पत्ते की प्लेट बनाने के लिए टौर पत्ते (डीएमयू सुकेत और मंडी)

शतावरी

चिरायता

- ✓ पेरिस पॉलीफाइला (सतुआ) (डीएमयू चौपाल)
- ✓ एकोनिटम हेटरोफिलम (पतिश) (डीएमयू पार्वती)
- ✓ ऐसपरेगस रेसमोसस (शतावरी) (डीएमयू मंडी)
- ✓ एलोवेरा वर. बारबाडेंसिस (घृतकुमारी) (डीएमयू सुकेत)
- ✓ पिक्रोराईजा कुरूआ (कुटकी) और स्वरसिया कॉर्डेटा (चिरायता) (हिमालयी अनुसंधान समूह को आउटसोर्स)
- ✓ हरड (टर्मिनलिया चेबुला)
- ✓ रीठा (सपिंडस मुकोरोसी)
- ✓ आंवला (एम्ब्लिका ऑफिसिनैलिस)
- ✓ ड्रमस्टिक ट्री (मोरिंगा ओलीफेरा)

अनुसंधान संस्थानों के साथ अभिसरण/सहयोगः

- **हिमाचल प्रदेश वन विभाग**
- **वन समृद्धि जन समृद्धि योजना**
- **आर.सी.एफ.सी (एन.आर.–I) भारतीय चिकित्सा पद्धति अनुसंधान संस्थान (RIISM), जोगिंदर नगर, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश**
  - ✓ ज्ञान साझा करना
  - ✓ तकनीकी प्रदर्शन
  - ✓ ऑनलाइन मार्केटिंग
- **बागवानी एवं वानिकी विद्यालय नेरी, जिला हमीरपुर**
  - ✓ वन रक्षकों/मालियों को ग्राफ्टिंग तकनीक पर प्रशिक्षण।
  - ✓ जाइका पौधशालाओं में मास्टर प्रशिक्षकों

को ग्राफ्टिंग तकनीक पर उन्नत प्रशिक्षण।

- **वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद–हिमालय जैव संसाधन प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.एस.आई.आर.–आई.एच.बी.टी.) पालमपुर**
  - ✓ पामारोसा घास उगाने की प्रसार तकनीक
  - ✓ जंगली और कृत्रिम रूप से उगाई गई पामारोसा किस्मों के तेल का परीक्षण
  - ✓ पामारोसा घास का तेल निकालने के लिए मशीनरी का उपयोग
  - ✓ प्लांट टिशू कल्चर के माध्यम से सतुआ (पेरिस पॉलीफीला) को उगाना
- **हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला/हिमालयन रिसर्च ग्रुप शिमला/विघ्नहार नर्सिंग होम पुणे**
  - ✓ सर्पदंश के घावों के लिए जीवाणुरोधी हर्बल उपचार का विकास।
  - ✓ चिरायता की खेती करने वाले किसानों के लिए अतिरिक्त मूल्य श्रृंखला तैयार करना।
- **खुम्ब अनुसंधान निदेशालय (डी.एम.आर.) सोलन**
  - ✓ प्रशिक्षण
  - ✓ तकनीकी और ज्ञान साझा करना
  - ✓ ICAR-DMR भा.कृ.अनु.प.–खुम्ब अनुसंधान निदेशालय, सोलन के साथ गुच्छी (मोर्चेला प्रजाति) और कीड़ा जड़ी (कॉर्डिसेप्स साइनेंसिस) की व्यावसायिक खेती करना।

सौजन्यः सीएसआईआर–आईएचबीटी की पामारोजा तेल आसवन इकाई

ग्राफ्टिंग तकनीक पर उन्नत प्रशिक्षण के समापन समारोह का एक छायाचित्र, नेरी, हमीरपुर

हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से बिलासपुर वन मण्डल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र के सीमांकित स्थायी वन क्षेत्र ढींगू में **पालमारोसा की खेती** का परीक्षण/अनुसंधान व प्रयोगात्मक विकास कार्य प्रगति पर है। इसकी सफलता परियोजना के उद्देश्य को प्राप्त करने के साथ–साथ ग्रामीण गरीब समुदाय की आजीविका में सुधार करने के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाएगी।

जाइका वानिकी परियोजना मुख्यालय शिमला में डॉ अरुण चन्दन (क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय सुगमता केंद्र उत्तर भारत–1) राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड, जोगिन्दरनगर) की अगवाई वाले 3 सदस्यीय दल ने मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका), श्री नागेश कुमार गुलेरिया से परियोजना के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। वार्ता के दौरान औषधीय पौधों से सम्बंधित तकनीकी जानकारियों को भी साझा किया गया तथा जड़ी बूटी प्रकोष्ठ द्वारा इनके उगाने एवं सरंक्षण से सम्बंधित इजराइली तकनीक के इस्तेमाल की संभावनाओं पर भी विचार–विमर्श हुआ।

“

जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से बिलासपुर वन मण्डल के **घुमारवीं वन परिक्षेत्र के ढींगू में पामारोजा की खेती** का प्रयोगात्मक विकास कार्य प्रगति पर है। इसकी सफलता परियोजना के उद्देश्य को प्राप्त करने के साथ–साथ ग्रामीण गरीब समुदाय की आजीविका में सुधार करने के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाएगी। इस सम्बन्ध में मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका), श्री नागेश कुमार गुलेरिया, जड़ी बूटी प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ रमेश चंद कंग, डॉ हर्ष मित्तर (Retd. PCCF WL) व मैनेजर (उद्यम विकास) डॉ अखिलेश ठाकुर ने **पामारोजा साइट** का दौरा किया तथा तैयार पौध का निरीक्षण किया। इस दौरान डॉ हर्ष मित्तर ने पामारोजा ग्रास की खेती एवं कटाई से सम्बंधित तकनीकी विषयों पर जानकारी दी तथा वहां पर मौजूद जाइका अधिकारियों व कर्मचारियों को उचित दिशा निर्देश भी दिए।

जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से बिलासपुर वन मण्डल के **घुमारवीं वन परिक्षेत्र के ढींगू में पामारोजा की खेती** का प्रयोगात्मक विकास कार्य सफल रहा है। इस सम्बन्ध में सी.एस.आई.आर–**हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर की तेल आसवन इकाई** की सहायता से पामारोजा तेल निकाला गया। इसकी सफलता परियोजना के उद्देश्य को प्राप्त करने के साथ–साथ ग्रामीण गरीब समुदाय की आजीविका में सुधार करने के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाएगी।

03

आजीविका सुधार सहयोग

“

जायका वानिकी परियोजना के सौजन्य से वन मंडल व वन परिक्षेत्र कुल्लू में गठित ग्राम वन विकास समिति सारी–2 के स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को खड्डी चलाने का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही उन्हें संगठित रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया और साथ ही खडीयां भी उपलब्ध करवाई गई। प्रशिक्षण के उपरांत समूह द्वारा बनाए गए शॉल, पट्टू, टोपी इत्यादि बाजार में बिकने के लिए तैयार हैं। इससे महिलाओं के आत्मविश्वास को नई ऊर्जा मिली है।

जाइका वानिकी परियोजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए कईं कदम उठाये जा रहे हैं। परियोजना के सहयोग से मण्डी वन मंडल के माण्डल वार्ड में **निकिता व लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह** को बडियां व सीरा तैयार करने की ग्राइंडिंग मशीन दी गई। इससे पहले समूह की महिलाओं को परियोजना द्वारा खाद्य प्रसंस्करण एवं मुल्य संवर्धन पर निशुल्क दो दिवसीय प्रशिक्षण भी दिलवाया गया है। जिला मण्डी में घरों के अन्दर निर्मित बड़ियों व सेपु बड़ियों की काफी मांग रहती है। इस तरह के प्रशिक्षण से स्वयं सहायता समूहों को अपनी पहचान मिलेगी व आजीविका वर्धन सुनिश्चित होगी।

वन मंडल व वन परिक्षेत्र कुल्लु में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत गठित **ग्राम वन विकास समिति बस्तोरी** के नारी शक्ति स्वयं सहायता समूह के सदस्यों ने मशरूम उत्पादन शुरू किया।

जाइका वानिकी परियोजना के कर्मचारियों ने पनीर बनाने की प्रक्रिया में शामिल विभिन्न चरणों, मशीनरी और उपकरणों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए दत्तनगर, रामपुर बुशहर में लगे दुग्ध संयंत्र का दौरा किया तथा आनी वन मंडल के **निथर वन परिक्षेत्र के नौनी ग्राम वन विकास समिति** के स्वयं सहायता समूह ने पनीर निर्माण की व्यावसायिक योजना तैयार करने व इसके विपणन सम्बन्धी रणनीतियों की जानकारी ली।

बिलासपुर वन मण्डल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित **सिद्ध बाबा गोदरडिया रोहिण ग्राम वन विकास समिति** के जागृति स्वयं सहायता समूह को पत्तल बनाने की मशीन आवंटित की गई है। जिसको चलाने के लिए परियोजना कर्मचारियों ने समूह के सदस्यों को प्रशिक्षण दिया।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत बिलासपुर वन मण्डल के घुमारवीं वन परिक्षेत्र में गठित **आदर्श ग्राम वन विकास समिति टुंडवी फाइंडहैर के बाबा कैलू स्वयं सहायता समूह और जीवन ज्योति ग्राम वन विकास समिति बकरोवा** के राधिका स्वयं सहायता समूह को परियोजना के माध्यम से सीरा व बड़ी बनाने की मशीने उपलब्ध करवाई गई। जिससे समूह ने विक्रय हेतु उत्पाद तैयार करना आरम्भ कर दिये हैं।

जाइका वानिकी परियोजना के सौजन्य से वन मण्डल कुल्लू के वन परिक्षेत्र भुट्टी में गठित **ग्राम वन विकास समिति खणीपाण्डे–पवणग** के स्वयं सहायता समूह अम्बिका की महिलाओं को खड्डी चलाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसमें की शॉल, पट्टू, टोपी इत्यादि तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में समूह की 12 महिलाएं भाग ले रही हैं और ये प्रशिक्षण डेढ़ महीने तक चलेगा। यह कार्यक्रम परियोजना के आजीविका सुधार घटक के अंतर्गत किया जा रहा है ताकि महिलाओं को सामूहिक रूप से अपनी आजीविका बढ़ाने का एक अतिरिक्त माध्यम उपलब्ध हो सके।

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया आई.एफ.एस. ने आज वन मण्डल कुल्लू के वन परिक्षेत्र भुट्टी की वन विकास समिति खणीपाण्डे–पवणग का दौरा किया। जहाँ उन्होंने स्वयं सहायता समूह अम्बिका को दिए जा रहे **खड्डी प्रशिक्षण कार्यक्रम** में सम्मिलित महिलाओं से रोजगार सृजन की इस गतिविधि बारे विस्तृत चर्चा की। उल्लेखनीय है कि जाइका वानिकी परियोजना के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में शॉल, पट्टू, टोपी इत्यादि तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में समूह की कुल 12 महिलाएं भाग ले रही हैं और ये प्रशिक्षण डेढ़ महीने तक चलेगा। यह कार्यक्रम परियोजना के आजीविका सुधार घटक के अंतर्गत किया जा रहा है ताकि महिलाओं को सामूहिक रूप से अपनी आजीविका बढ़ाने का एक अतिरिक्त साधन उपलब्ध हो सके। इस अवसर पर सुश्री मीरा, निदेशक ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क कुल्लू व वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

नाचन वन मण्डल के अंतर्गत आने वाली करनाला व दाड़ी ग्रामीण वन विकास समिति में जाइका वानिकी परियोजना के सौजन्य से गठित **तीन स्वयं सहायता समूहों को 'हिल टॉप' संस्था** के सहयोग से मधुमक्खी पालन पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिवर आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण शिवर में स्वयं सहायता समूह 'शिकारी माता आस्था' व 'देवता कमरुनाग' के कुल 24 सदस्यों ने मधुमक्खी पालन को आजीविका वर्धन गतिविधियों के रूप में अपनाने में रूचि दिखाई।

04

संस्थागत क्षमता सुदृढ़ीकरण

परियोजना के अधिकारियों व कर्मचारियों ने **आनी वन मंडल में परियोजना के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समितियों** के प्रधानों के साथ बैठक आयोजित की। जिसमें परियोजना के स्टाफ ने समूह के सदस्यों के साथ 5 व्यावसायिक योजनाओं जैसे **कटाई व सिलाई, वर्मी कम्पोस्ट, मशरूम उत्पादन** इत्यादि के बारे में विस्तृत चर्चा की। इन योजनाओं को अब मंजूरी हेतु ग्राम सभा (जनरल हॉउस) के समक्ष पेश किया जाएगा।

परियोजना प्रबन्धन इकाई (पी.एम.यू.) शिमला एवं मंडल प्रबंधन इकाई (डी.एम.यू.), ठियोग द्वारा संयुक्त रूप से बालसन वन परिक्षेत्र के बैच–1 वार्ड समन्वयकों को जाइका वानिकी परियोजना की गतिविधियों तथा उनकी भूमिका के संबंध में श्री अशोक नेगी, डीएफओ, ठियोग, डॉ. ओमपाल शर्मा और ऋचा मेहता कार्यक्रम प्रबंधक, पीएमयू ने परियोजना के उद्देश्य, वि ेशताओं, घटकों तथा कार्यप्रणाली पर प्रशिक्षण दिया।

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, सामुदायिक एवं संस्थागत क्षमता उत्थान इकाई, जाइका वानिकी परियोजना, रामपुर की अध्यक्षता में आनी वन मण्डल व रामपुर वन मण्डल के वार्ड सुविधा प्रदायकों की एक दिवसीय समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में ग्रामीण वन विकास समितियों में नियुक्त सुविधा प्रदायकों के साथ परियोजना की जानकारी साँझा की गई।

शिमला वन मण्डल के तारादेवी वन परिक्षेत्र के घणाहट्टी में कण्डा ग्राम वन विकास समिति के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के लिए पाइन नीडल हस्तशिल्प का **तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (25 से 27 अक्टूबर, 2021 तक)** शुरू किया गया है। इस प्रशिक्षण शिविर में लगभग 20 महिलाओं ने भाग लिया। आजीविका वर्धन गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु व आय के एक अतिरिक्त स्रोत के रूप में चील की पत्तियों से हस्तशिल्प उद्योग एक प्रभावी माध्यम बन रहा है। जिसे महिलाओं द्वारा पसंद किया जा रहा है। बाजार में चील की पत्तियों से बने उत्पादों की काफी मांग है। इस तरह के प्रशिक्षण से महिलाओं को आय का एक अतिरिक्त साधन तो उपलब्ध करवाते ही हैं साथ ही महिलाओं को आत्मनिर्भरता के लिए भी प्रेरित करते हैं।

दिनाँक 27–09–2021 को वीडियो कॉनफ्रेंस के माध्यम से **''12 वीं0 परियोजना निदेशक''** की बैठक का संचालन जाइका इंडिया के मुख्य विकास विषेशज्ञ श्री विनीत सरीन द्वारा किया गया। इस वर्चुअल बैठक में देश के विभिन्न राज्यों में जापान सरकार की मदद से चलाई जा रही परियोजनाओं के बारे में जानकारी ली गई। मुख्य रूप से ''सतत आजीविका और अंतर क्षेत्रीय अभिसरण'' पर सभी राज्यों में किए गए कार्यक्रमों पर राज्य के परियोजना निदेशकों द्वारा प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से., अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) द्वारा हिमाचल प्रदेश में आजीविका संवर्धन पर किए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई ।

जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत वन परिक्षेत्र तारादेवी में स्वयं सहायता समूहों के लिए चील की पत्तियों के उत्पाद बनाने के लिए **तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर** का आयोजन ग्राम पंचायत घणाहट्टी के पंचायत भवन में किया गया। जिसमें कुफरीधार, कंडा, शिलडू और तलायल के स्वयं सहायता समूह की **21 महिलाओं** ने भाग लिया। महिलाओं द्वारा चील की पत्तियों से विभिन्न उत्पाद जैसे फूलदान, गुल्लक, पर्स, चपाती बॉक्स, बॉल, हैंगिंग आदि वस्तुओं के निर्माण का प्रशिक्षण दिया। इस तरह के प्रशिक्षण हस्तशिल्प कला को प्रोत्साहित करते हैं साथ में महिलाओं को

आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक होते हैं। इस मौके पर परियोजना से रिचा मेहता, रीना शर्मा और प्रतिभा शर्मा उपस्थित रहे। महिलाओं ने चील की पत्तियों से बने उत्पादों के निर्माण में बहुत रूची ली।

अतिरिक्त् प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से. की अध्यक्षता में शिमला वन वृत्त के राज्य वन निगम सभागार में जाइका वानिकी परियोजना से सम्बंधित किये जा रहे कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। उन्होंने परियोजना की गतिविधियों को और गति प्रदान करने, स्वयं सहायता समूहों को सशक्त करने तथा उनकी आय वृद्धि पर बल दिया। इस अवसर पर मुख्य अरण्यपाल शिमला श्री एस.डी. शर्मा, वन मण्डलाधिकारी शिमला, ठियोग, चौपाल व रोहडू सहित वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

आजीविका वर्धन गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु व आय के एक अतिरिक्त स्रोत के रूप में मशरूम उत्पादन एक प्रभावी माध्यम बन रहा है। इसी के चलते आनी वन मण्डल के निथर वन परिक्षेत्र में परियोजना के अंतर्गत गठित ग्राम वन विकास समिति नौणी एवं जझार के स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के लिए मशरूम उत्पादन पर **मशरूम प्रशिक्षण केन्द्र दत्तनगर** में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

श्री गिरीश भारद्वाज, परियोजना प्रबंधन सलाहकार की अध्यक्षता में जोगिन्दरनगर वन मण्डल के उरला, जोगिन्दरनगर एवं लडभरोल वन परिक्षेत्र की ग्राम वन विकास समितियों व वार्ड फैसिलिटेरों के लिए **एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन** किया गया। जिसमें की **मॉड्यूल–2** का प्रशिक्षण दिया गया व समितियों के तहत की जा रही आजीविका गतिविधियों का जायजा लिया गया। इसके अलावा वन विकास समितियों व स्वयं सहायता समूहों से सम्बंधित रजिस्टरों को भरने सम्बन्धी जानकारी समूहों को दी गई। इस अवसर पर परियोजना प्रबंधन इकाई शिमला से श्रीमती ऋचा मेहता, श्री विनोद शर्मा, श्री वी. एस. यादव व वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

प्रमुख गतिविधियाँ

आज श्री आर.डी. धिमान, अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन) हिमाचल प्रदेश सरकार की अध्यक्षता में जाइका वानिकी परियोजना की गवर्निंग बॉडी की **5 वीं. बैठक हि. प्र. सचिवालय शिमला** में आयोजित की गई। इस बैठक में डॉ. सविता (प्रधान मुख्य अरण्यपाल, HoFF) हि. प्र. वन विभाग, श्री नागेश कुमार गुलेरिया (मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका), परियोजना निदेशक (जाइका मुख्यालय शिमला), परियोजना निदेशक (जाइका क्षेत्रीय कार्यालय कुल्लु), गवर्निंग बॉडी के सदस्य व अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी शामिल हुए। जिसमें परियोजना संबंधी विभिन विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई।

72वें वन महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री नागेश कुमार गुलेरिया, मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने कुल्लू जिले के निरमण्ड में पौधरोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में आनी, रामपुर, कोटगढ़, किन्नौर के वन मण्डलाधिकारीय मण्डलीय प्रबंधक, वन निगम, रामपुरय वन विभाग के अन्य क्षेत्रीय अधिकारी व कर्मचारी एवं स्थानीय लोग भी शामिल हुए। मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) ने सभी उपस्थित स्थानीय लोगों से आवाहन् किया कि सभी लोग वन एवं वन्यप्राणियों के संरक्षण में वन विभाग का सहयोग करें।

माननीय मुख्यमंत्री श्री जय राम ठाकुर जी ने जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत चलाई जा रही आजीविका वर्धन गतिविधियों से सम्बंधित **पोस्टर्स का विमोचन** किया। इस मौके पर मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, परियोजना निदेशक (जाइका) श्री राजेश शर्मा, मण्डी वन मण्डल के मंडलाधिकारी श्री एस. एस. कश्यप और अन्य परियोजना के अधिकारी व कर्मचारी भी शामिल हुए।

आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा प्रायोजित 9 अगस्त से 15 अगस्त, 2021 तक चलने वाले **''स्वच्छ हिमाचल अभियान 2021''** के पहले दिन आज जाइका वानिकी परियोजना के पॉटर्स हिल स्थित मुख्यालय परिसर व आस–पास के कूड़ा संभावित स्थानों की पहचान कर, वहां से कूड़ा एकत्र कर परियोजना अधिकारियों, कर्मचारियों तथा समीप के कार्यालयों के कर्मियों के साथ मिलकर इस क्षेत्र को कूड़ा रहित किया गया।

आज **"स्वच्छ हिमाचल अभियान 2021"** का तीसरा दिन ठोस कचरा प्रबंधन और स्वच्छता मोबाइल एप्लिकेशन जागरूकता पर केंद्रित रहा। इससे पूर्व पिछले कल जाइका वानिकी परियोजना के अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया के नेतृत्व में कर्मचारियों ने पर्यटन स्थल पॉटर्स हिल से पॉलिथीन कचरा एकत्र कर नगर निगम शिमला को उचित प्रबंधन हेतु सौंपा। इस पर्यटन स्थल पर आने वाले पर्यटकों व अन्य आगंतुकों को भी जागरूक किया।

मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, की अध्यक्षता में आज ACSTI सांगटि समरहिल में जाइका वानिकी परियोजना के विभिन्न वन मण्डलों से आए व् मुख्यालय शिमला के अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कि बैच–1 की ''वन विकास समितियों'' की कार्य प्रणाली, इनके द्वारा वित्तीय उपयोग एवं क्षेत्र में की गई गतिविधियों तथा इनके अधीन गठित स्वयं सहायता समूहों की कार्यप्रणाली व व्यावसायिक योजनाओं के विषय में तथा जड़ी बूटी प्रकोष्ठ की गतिविधियों एवं क्षेत्र में इनके कार्यान्वन सम्बंधित विस्तृत जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में श्री राजेश शर्मा (जाइका परियोजना निदेशक, मुख्यालय शिमला), श्री मति संगीता मैहला (जाइका परियोजना निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय कुल्लु) तथा डॉ. रमेश चंद कंग (निदेशक, जड़ी बूटी प्रकोष्ठ) भी शामिल हुए।

अतिरिक्तत प्रधान मुख्ये अरण्यपाल एवं मुख्यि परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया, भा.व.से. ने सुंदरनगर में विशेष बच्चों की **दो दिवसीय ओलंपिक प्रतियोगिता** का शुभारम्भ किया। जिसमें प्रदेश के 40 विशेष बच्चे अपना हुनर दिखा रहे हैं। इस अवसर पर विशेष बच्चों द्वारा लगाई प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया गया। इसके साथ ही श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने सभी लोगों को **साकार सोसाइटी फॉर डिफरेंटली एबल्ड पर्सन्स, सुंदरनगर, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश** (वेबसाइटः http%//www-sakarsnr-com/) से जुड़ने का भी आग्रह किया।

दिनांक 2 दिसम्बर, 2021 को राज्य सचिवालय शिमला में अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन) श्रीमती निशा सिंह की अध्यक्षता में जाइका वानिकी परियोजना की छठी गवर्निंग बॉडी की बैठक हुई। मुख्यातिथि एवं अन्य प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया भा.व.से. ने कहा कि कोविड महामारी के बाद भी परियोजना की गतिविधियों की प्रगति सुचारू रूप ले चलती रही है, जिसकी प्रशंसा जाइका सुपरविजन मिशन टीम ने अपने हाल ही के हिमाचल दौरे के दौरान की। अतिरिक्त मुख्य सचिव (वन) ने जाइका वानिकी परियोजना की मुख्य गतिविधियों की एक पत्रिका का भी अनावरण किया। इस अवसर पर प्रधान मुख्य अरण्यपाल श्री अजय श्रीवास्तव भी मौजूद रहे।

08–11–2021 को बिलासपुर वन मण्डल में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें **JICA India के मुख्य विकास विशेषज्ञ श्री विनीत सहाय सरीन** विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस दौरान परियोजना के तहत विकासात्मक कार्यों को लेकर चर्चा की गई तथा लोगों की आमदनी बढ़ाने के लिए जंगलों से एकत्रित चीड़ की पत्तियों को वन विभाग द्वारा दो रुपए प्रति किलोग्राम की दर से खरीदने का महत्त्वपूर्ण निर्णय भी लिया गया। इकठ्ठा की गई चीड़ की पत्तियों को जिला बिलासपुर के अंतर्गत बरमाणा में स्थित ए.सी.सी. सीमेंट उद्योग में भेजा जाएगा। इन चीड़ के पत्तियों को बेचने से प्राप्त राशि को संबधित लोगों में वितरित किया जाएगा। इस दौरान श्री नागेश गुलेरिया भा.व.से., अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका), डॉ आर.सी. कंग निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ), अनिल शर्मा (सी. सी.एफ. बिलासपुर), अवनी भूषण राय (डी.एफ. ओ. बिलासपुर) व अन्य लोग भी मौजूद रहे।

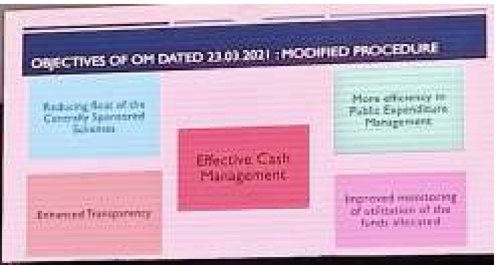

India's 75 Aazadi Ka Amrit Mahotsav, a 75 weeks long celebration was launched by Hon'ble Prime Minister on 12th March, 2021 to celebrate and commemorate 75 years of independence. As part of activities to be undertaken by the Department of Expenditure, the Public Financial Management System (PFMS) Division has organised PFMS Mela in the State celebrating the Mahotsav. PFMS Division has organised a workshop today at Hotel "The Peterhof", Chaura Maidan, Near All India Radio Shimla (HP), highlighting the Single Nodal Account (SNA) and the Receipts, Expenditure, Advance and Transfer (REAT) Module. Addl. Pr. CCF and Chief Project Director (JICA) Sh. Nagesh Kumar Guleria (IFS) participated in the workshop.

दिनांक 8 नवम्बर, 2021 को वन मण्डल बिलासपुर में आयोजित जाइका गतिविधियों की प्रगति से सम्बंधित एक प्रदर्शनी का अवलोकन करते जाइका समीक्षा मिशन के **मुख्य विकास विशेषज्ञ श्री विनीत सहाय सरीन तथा श्री नागेश गुलेरिया भा.व.से, अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) हि. प्र.।** उन्होंने स्वयं सहायत समूह द्वारा आय सृजन उत्पादों बारे सदस्यों से सीधे संवांद द्वारा वार्तालाप की। इस अवसर पर डॉ आर.सी. कंग निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ), अनिल शर्मा (सी.सी.एफ. बिलासपुर), अवनी भूषण राय (डी.एफ.ओ. बिलासपुर) व अन्य लोग भी मौजूद रहे।

सुकेत वन मण्डल के अधीन आने वाली ग्राम पंचायत बायला के रोपड़ी वार्ड में जाइका समीक्षा मिशन के मुख्य विकास विशेषज्ञ श्री विनीत सहाय सरीन ने विशेष रूप से शिरकत की और परियोजना के अंतर्गत हुए विकास कार्यों पर चर्चा की। सबसे पहले उन्होंने वन विकास संमिति रोपड़ी के अंतर्गत गठित **लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह** को परियोजना के माध्यम से प्रदान की गयी एलो वेरा का निरिक्षण किया। उसके पश्चात लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह ने आचार, **मुरारी देवी, रिधि और जोगनी माता स्वयं सहायता समूह** ने मशरूम और **जगदंबा समूह** ने पनीर के उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई। सभी अधिकारियों ने वन मण्डल के अधीन हो रहे विकास कार्यों को सराहा। इस अवसर पर मुख्य परियोजना निदेशक(जाइका) नागेश गुलेरिया, निदेशक जड़ी बूटी प्रकोष्ठ डॉ आर.सी. कंग, अतिरिक्त परियोजना निदेशक संगीता महला, वनमंडलाधिकारी सुकेत सुभाष पराशर और वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे ।

“

जाइका समीक्षा मिशन के मुख्य विकास विशेषज्ञ श्री विनीत सहाय सरीन ने मण्डी वन मण्डल में जाइका वानिकी परियोजना के अंतर्गत तैयार की गई **अत्याधुनिक पौधशाला कमांद** का दौरा किया तथा तैयार की जा रही पौध का निरीक्षण व समीक्षा की। इसके पश्चात् उन्होंने विहनधार–1 में पत्तल बनाने वाले स्वयं सहायता समूहों के साथ बातचीत की तथा उनकी समस्यों का मौके पर ही निपटारा किया। इस अवसर पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया भा.व.से., निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ) डॉ आर.सी. कंग, वन मंडलाधिकारी श्री वासू डोगरा सहित वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

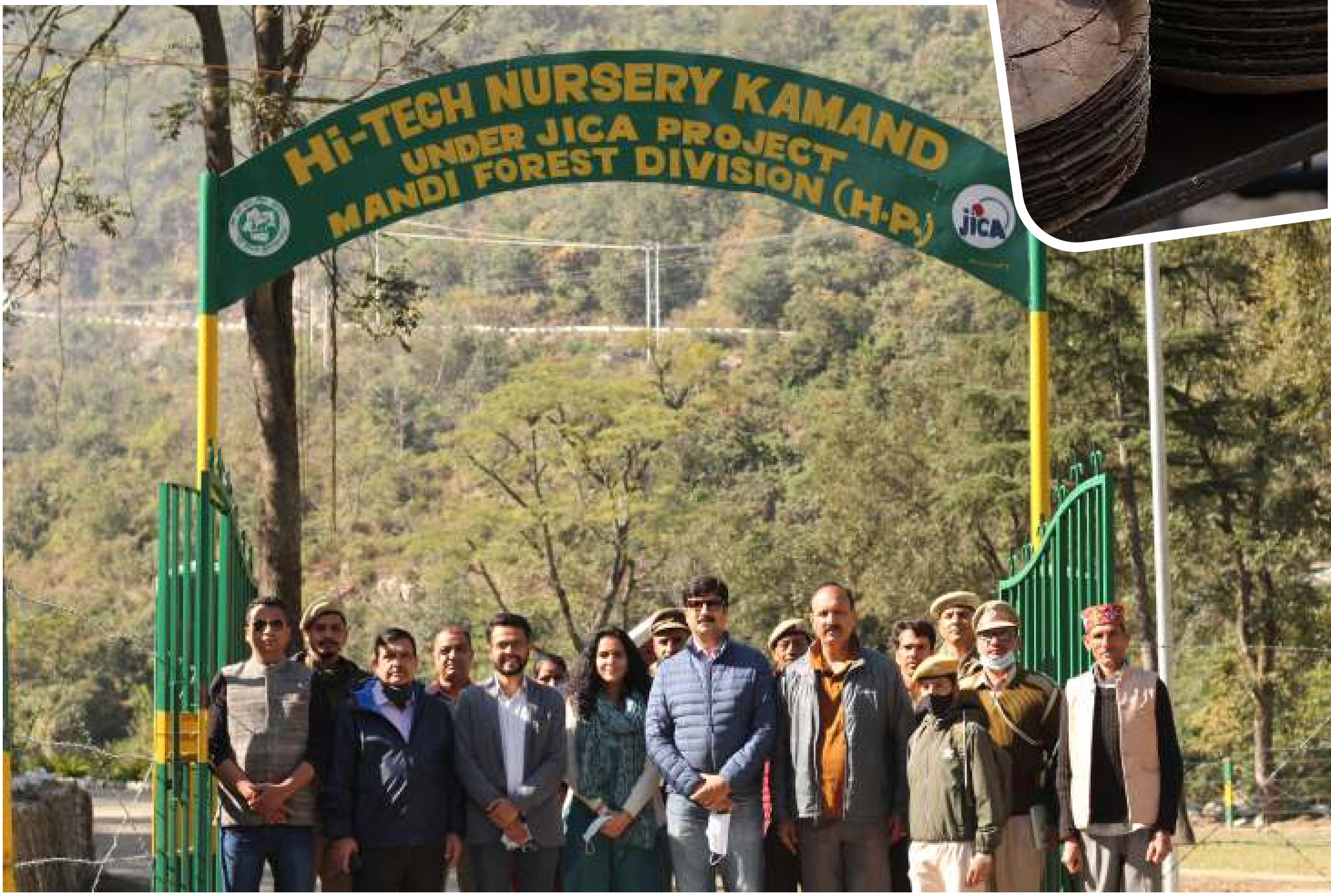

जाइका इंडिया के मुख्य विकास विशेषज्ञ श्री विनीत सहाय सरीन व अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया भा.व.से. हि.प्र. ने मण्डी वन परिक्षेत्र के अंतर्गत टिक्करी और मांडल वार्ड का दौरा किया तथा किए गए कार्यों का निरीक्षण किया। टिक्करी वार्ड में **संसरपाली पौधारोपण** और सेन टौणा देव जंगल में 10 हेक्टेयर में किए गए पौधरोपण का निरीक्षण किया। इसके बाद मांडल गांव में लक्ष्मी और निकिता स्वयं सहायता समूहों के द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को देखा और सदस्यों से बातचीत करके उनकी समस्यों का समाधान किया। एंट्री प्वाईट एक्टिविटी के अंतर्गत बनाये जा रहे खेल के मैदान का निरीक्षण भी किया। इस मौके पर निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ) डॉ आर.सी. कंग, वन मंडलाधिकारी श्री वासू डोगरा सहित वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

जाइका का सुपरविजन दल श्री अकमीनों कैमों, सीनियर रिप्रेजेन्टेटिव, जाइका इंडिया तथा श्री विनीत सहाय सरीन, मुख्य विकास विशेषज्ञ ने ठियोग वन मण्डल का दौरा किया। उन्होंने शिमला, रोहड़ू, चौपाल तथा ठियोग वन मण्डल से आए ग्राम वन विकास समितियों व स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधियों के साथ जाइका गतिविधियों की प्रगति बारे सीधा संवाद किया। इसके पश्चात सांस्कृतिक दल ने जाइका परियोजना के संदेश से ओतप्रोत कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। जाइका पर्यवेक्षण मिशन ने हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना के प्रयासों की सराहना भी की। इस मौके पर अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया भा.व.से., निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ) डॉ आर.सी. कंग, मुख्य अरण्यपाल शिमला एस.डी. शर्मा सहित वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

जाइका का सुपरविजन दल श्री अकमीनों कैमों, सीनियर रिप्रेजेन्टेटिव, जाइका इंडिया तथा श्री विनीत सहाय सरीन, मुख्य विकास विशेषज्ञ ने जाइका वानिकी परियोजना द्वारा आयोजित एक ड्रोन लॉचिंग समारोह में एक ड्रोन को लॉच किया। अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया भा.व.से. ने कहा कि शुरू में इस सुविधा का इस्तेमाल परियोजना के चुनिंदा पायलट क्षेत्र में किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अपनी गति और सटीकता के कारण इस प्रणाली से क्षेत्र की स्कैनिंग, थर्मल इमेजरी, स्थलाकृतिक सर्वेक्षण और एरियल मैपिंग की जा सकेगी जिससे प्रदेश में अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप वैज्ञानिकी वन प्रबंधन को बल मिलेगा। इस अवसर पर निदेशक (जड़ी बूटी प्रकोष्ठ) डॉ आर.सी. कंग, मुख्य अरण्यपाल शिमला एस.डी. शर्मा सहित वन विभाग के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल एवं मुख्य परियोजना निदेशक (जाइका) श्री नागेश कुमार गुलेरिया ने माननीय वन, युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री श्री राकेश पठानिया जी से शिमला में **शिष्टाचार भेंट** की और उन्हें हिमाचल प्रदेश जाइका वानिकी परियोजना की ओर से नव वर्ष की हार्दिक शुभ कामनाएं दी। इस दौरान उन्हें परियोजना के तहत हो रही गतिविधियों की प्रगति की जानकारी भी दी।

मीडिया में परियोजना गतिविधियां...

उत्पाद बेचने को बाजार का भी इंतजाम करेगा जायका प्रोजेक्ट

स्वारघाट में वन विभाग अधिकारियों ने लोगों को दी परियोजना की जानकारी

आय बढ़ाने के बताए जाएंगे तरीके

आपका फैसला

शिमला, शुक्रवार, 3 दिसंबर, 2021

रोपड़ी में जायका मिशन की समीक्षा

रोपड़ी में विकास कार्यों की सराहना

प्रदेश में बेहतर काम कर रही जाइका

पेंसिल्वेनिया की राजदूत चौधरी ने किया मुख्यालय का दौरा

www.himachaldastak

शिमला, वीरवार 11 नवंबर

जाइका वानिकी परियोजना की स...

आपका फैसला TV

चीड़ की पत्तियों के उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण

शिमला, शुक्रवार, 12 नवंबर, 2021

दिव्य हिमाचल

हिमाचल जाइका वानिकी परियोजना की सराहना

प्रदेश के संक्षिप्त मंडल के क्षेत्रों का भ्रमण के बाद शिमला पहुंचे जाइका सुपरविजन मिशन दल ने दी शाबाशी

मुख्य विकास विशेषज्ञ ने जांची वन मंडल में जारी जायका की गतिविधियां

• खबरनामा ब्यूरो

वन मंडल मंडल में जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी यानी जायका द्वारा जारी गतिविधियों का आज परियोजना समीक्षा मिशन के मुख्य विकास विशेषज्ञ विनित एस. सरीन ने निरीक्षण किया और समीक्षा की। सबसे पहले उन्होंने कमांद स्थित नर्सरी का निरीक्षण किया और बाद में बिहनधार-1 में पत्तल बनाने वाले स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ वार्ता करके उनकी समस्याओं पर चर्चा करके उनका समाधान किया।

मंडी वन परिक्षेत्र के अंतर्गत टिक्करी और मांडल वार्ड में किए गए कार्यों का निरीक्षण किया गया। टिक्करी वार्ड में संसरपाली पौधारोपण और सेन टीणा देव जंगल में 10 हेक्टेयर क्षेत्र में किए गए पौधारोपण का निरीक्षण किया।

इसके बाद मांडल गांव में लक्ष्मी और निकिता स्वयं सहायता समूहों के द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को देखा और सदस्यों से बातचीत करके उनकी समस्याओं का समाधान किया गया। इसके साथ ही वीएफडीएस के सदस्यों के साथ बातचीत भी की गई। एंट्री प्वाइंट एक्टिविटि के अंतर्गत बनाए जा रहे खेल के मैदान का निरीक्षण भी किया गया।

इस मौके पर जायका समीक्षा मिशन टीम में परियोजना निदेशक नागेश गुलेरिया, जड़ी बूटी विशेषज्ञ आरसी कंग और वन मंडलाधिकारी मंडी वासु डोगर सहित वन विभाग के अन्य अधिकारी और कर्मचारी भी मौजूद ...

विकास कार्यों का लिया जायजा

जायका समीक्षा मिशन के मुख्य विकास विशेषज्ञ विनीत ने किया निरीक्षण

शिमला, गुरुवार, 11 नवंबर, 2021

epaper.divyahimachal.com

एचपी जेआईसी वानिकी परियोजना के प्रयास सराहे

रोपड़ी वार्ड में समीक्षा मिशन के तहत कार्यशाला का आयोजन

हिमाचल प्रदेश में परियोजना के अर्न्तगत वन मण्डल, वन परिक्षेत्र व वन संरक्षित क्षेत्र का मानचित्र

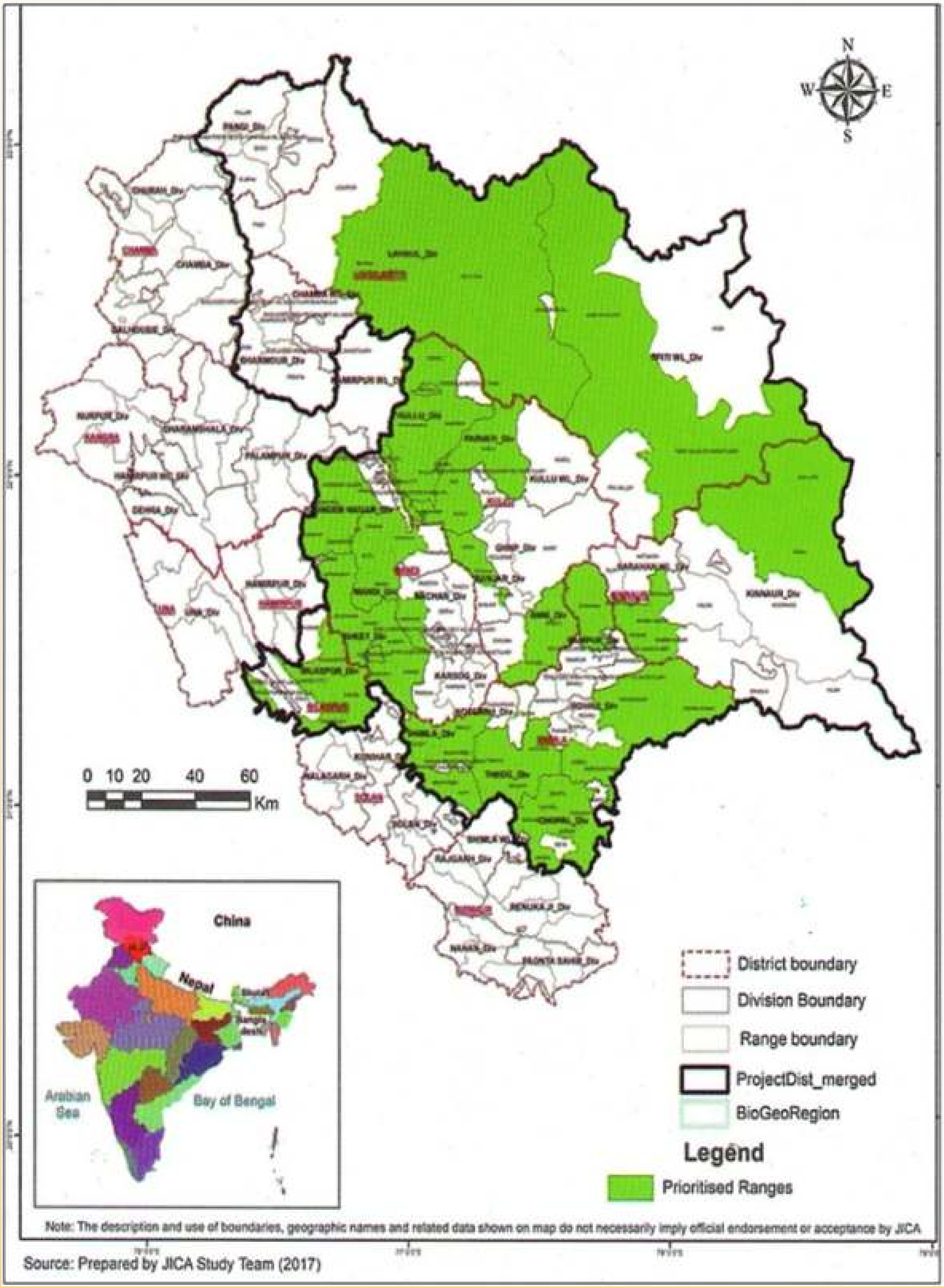

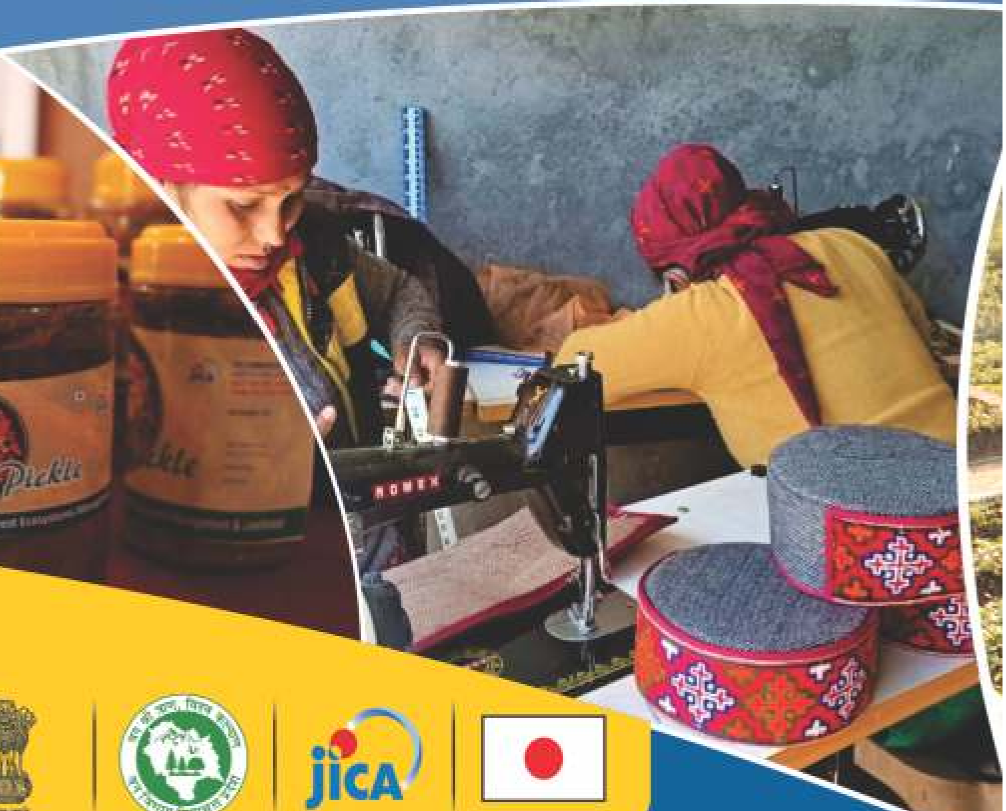

अधिक जानकारी के लिए कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें

मुख्य परियोजना निदेशक, जाइका वानिकी परियोजना

पॉटर्स हिल, समरहिल, शिमला–5, हिमाचल प्रदेश। दूरभाषः 0177–2830217, ई.मेलः **cpdjica2018hpfd@gmail.com**

***

परियोजना निदेशक, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, कुल्लू। दूरभाषः– 01902–226636, ई.मेल: **pdjicakullu@gmail.com**

***

अतिरिक्त परियोजना निदेशक, सामुदायिक एवं संस्थागत क्षमता उत्थान इकाई

जाइका वानिकी परियोजना, रामपुर। दूरभाषः 01782–234689, ई.मेल:**dpdrmp2018@gmail.com**

***